हँसती दुनिया

वर्ष 44 अंक 04
अप्रैल 2017

₹ 15/-

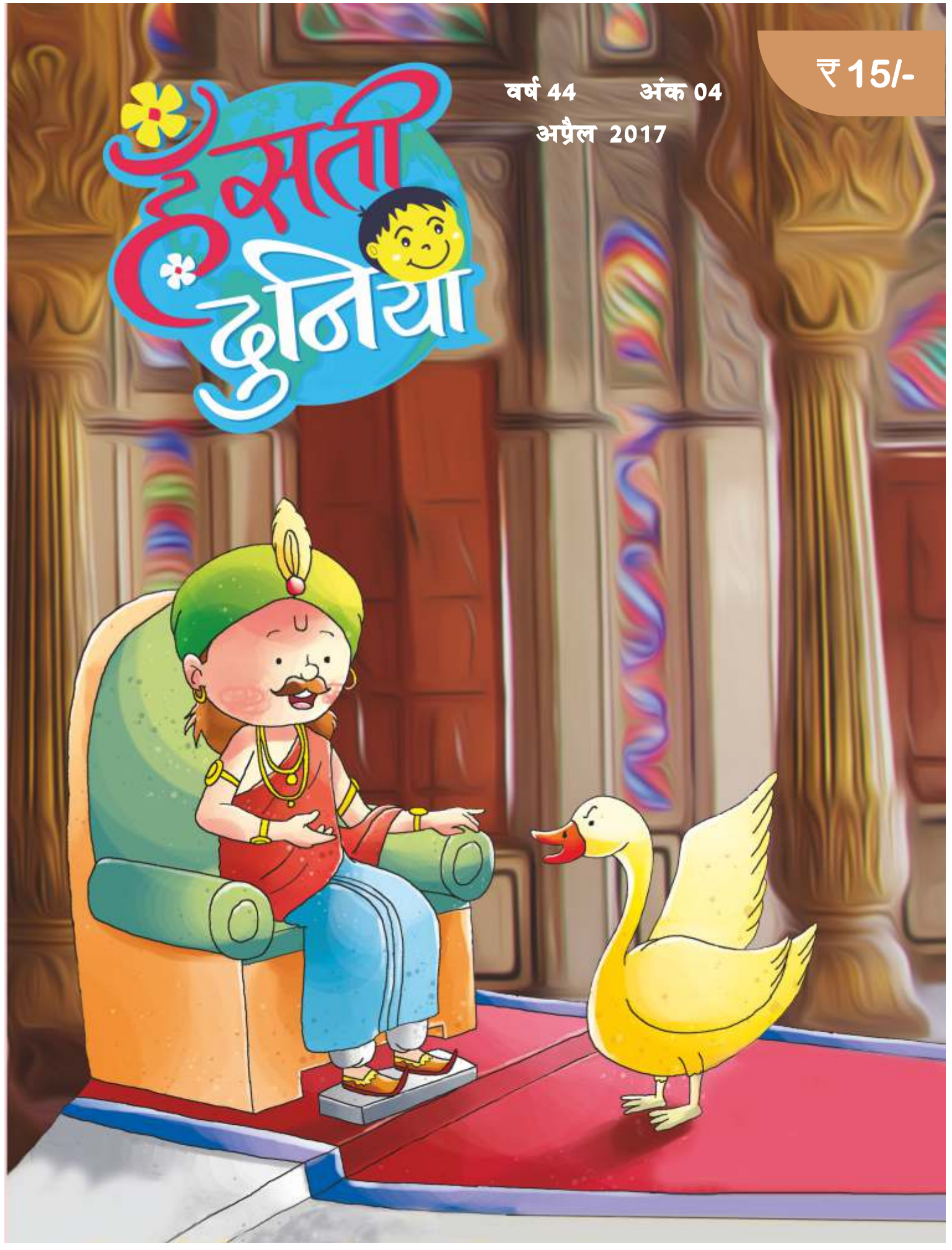

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 04 ● अप्रैल 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
20. वर्ग पहेली
25. पहेलियां
44. पढ़ो और हँसो
46. कभी न भूलो
47. आपके पत्र मिले
48. रंग भरो परिणाम
50. बताओ तो जानें

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

विशेष / लेख

6. बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज के पावन वचन
16. घटता–बढ़ता चंद्रमा
: ईलू रानी
22. सेल्सियस और फारेनहाइट...
: विभा वर्मा
23. अज़ीबोगरीब संग्रहालय
: दिनेश दर्पण
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल
38. बारहसिंगा
: डॉ. परशुराम शुक्ल

कविताएं

8. मिलजुलकर करें सफाई
: हरजीत निषाद
19. पर्यावरण के रक्षक
: महेन्द्र सिंह शेखावत
19. कितना घातक पोलीथीन
: रूपनारायण काबरा
29. आसमान के चंदा–तारे
: घमंडीलाल अग्रवाल
33. हिमालय
: उमाशंकर यादव
41. इंटरनेट, रोबोट एक दिला दो
: राजकुमार जैन 'राजन'

कहानियां

9. सच्ची सेवा
: महेन्द्र सिंह शेखावत
10. मुहर पर नाम
: ईलू रानी
17. वचन निभाया
: कमल जैन
21. कबूतर किसका?
: राधेलाल 'नवचक्र'
26. जासूस चीकू
: फारुख हुसैन
31. प्रायश्चित
: नित्या त्रिपाठी
42. सुनहरे हंस
: राजकुमार जैन 'राजन'

सबसे पहले

परीक्षा का परिणाम आने वाला है। सचिन बहुत ही व्याकुल एवं परेशान–सा दिखाई दे रहा है। उसे अपने परिणाम की चिन्ता हो रही है। उससे सभी को बड़ी उम्मीदें हैं कि वह बहुत ही अच्छे नम्बर लाएगा और सबको चकित कर देगा। सचिन स्वयं भी यही कहता रहा है कि मैं इस बार किसी को आगे नहीं निकलने दूंगा।

अन्ततः परिणाम आ गया और सचिन पास भी हो गया। परन्तु वह एक सामान्य विद्यार्थी की तरह ही पास हुआ। उससे की गई कोई भी अपेक्षा पूरी नहीं हुई। वह उदास और हताश–सा दिखाई दे रहा है। अचानक ही उसके अध्यापक ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और प्यार से उसको समझाया–

''सभी को मेहनत करनी चाहिए। यह तो मैं हमेशा ही आप सभी को समझाता रहा हूँ। अच्छे परिणाम की अपेक्षा करना भी स्वाभाविक है। परन्तु केवल परिणाम की कामना लेकर कार्य करना हमें कई बार अपने लक्ष्य से भटका देता है। तुमने मेहनत करने के साथ–साथ यह भी कोशिश की कि कोई मुझसे और आगे न निकल जाए। इस विचार ने तुम्हारी कार्यशैली को प्रभावित कर दिया। तुम्हारा ध्यान दूसरों की असफलता पर अधिक लगने लगा और तुम अपनी मेहनत के फल को अपना अनुचित अधिकार मानने लगे। इसी सोच का नतीजा है कि तुम पास तो हुए परन्तु फिर भी पास होने की खुशी से वंचित रह गये।''

प्यारे साथियों! हमें कार्य करना है और अवश्य करना है क्योंकि कर्म ही जीवन है। किसी की अपेक्षा को पूरा करने के लिए भी कार्य किया जा सकता है परन्तु जब भी वह कार्य किया जा रहा हो उसमें हमारी अपनी शुभ इच्छा भी सम्मिलित होनी चाहिए ताकि कार्य को पूर्णता मिल सके।

कर्म करते समय यह ध्यान अवश्य रहे कि मुझे किसी से आगे निकलने के लिए कर्म नहीं करना अपितु मुझे अपने द्वारा पूर्व में किये गये कर्म से अच्छा और उत्तम कर्म करके अपने आप से आगे निकलना है। प्रतियोगिता, स्पर्धा स्वयं को सुधारने और विकसित करने के लिए है। यही सद्गुण स्वयं में स्थित करने का कारण बन जाएगा।

फूलों की खुशबू तो केवल वायु की दिशा में ही वायु के साथ–साथ प्रवाहित होती है परन्तु मानव के कर्म और सद्गुणों की महक तो पूरी मानवता में समा जाती है।

–विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 149

तूं दाता एं सभ तों वड्डा की कोई सिफ़त करे सरकार।
ज़ात तेरी है उच्ची सुच्ची नाम है तेरा इक निरंकार।
किन्नी ताकत तेरे अन्दर किन्ना रूप सुहाणा ए।
किन्नी मेहर ते बख़्शिश करनैं किन्ने रूप वटाना एं।
मैं मस्कीन निकम्मा बंदा तेरी किवें विचार करां।
इस काबल वी मैं तां नहीं आं तैथों जान निसार करां।
तैनूं हाज़र नाज़र वेखे ओह ही ब्रह्मज्ञानी ए।
अमर आत्मा अमर जोत ए जिस ने वी पहचानी ए।
कहे अवतार गुरु लड़ लग्गा भेद अलफ़ दा पावेगा।
सभनां जीयां दा जो दाता एसे दे गुण गावेगा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि परमात्मा सबको जीवन देने वाला और सबका पालन करने वाला है। इस प्रभु का गुणगान करना इन्सान के लिए आसान नहीं है।

निरंकार–प्रभु की महिमा करते हुए बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि हे प्रभु! तू सबसे ऊँचा और सबसे श्रेष्ठ है। तेरा नाम निरंकार है, तू दाता (देने वाला) है, तू सबसे बड़ा है। तू निराकार है, तेरा कोई आकार नहीं है। तू ही सबको, सब कुछ देने वाला है। तू सबसे विशाल है, तुझसे बड़ा और कोई नहीं है।

हे निरंकार–प्रभु तेरी प्रशंसा भला कौन कर सकता है? प्रभु तेरी कितनी ताकत है, तेरा रूप कितना सुहाना है, तेरे कितने रूप हैं, तेरी कितनी बख़्शिश है। मैं तो एक निरर्थक और कमजोर–सा इन्सान हूँ। मैं किस रूप में तेरा चिंतन कर सकता हूँ। मैं तो इस योग्य भी नहीं हूँ कि तेरे ऊपर अपना जीवन न्यौछावर कर सकूं।

निरंकार–प्रभु तू अमर आत्मा है, तू अमर ज्योति है। तेरे वास्तविक रूप को जानकर–पहचान कर जो तुझे अंग–संग व्याप्त देखता है, वही ब्रह्मज्ञानी है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि जो इन्सान सद्गुरु के साथ जुड़ जायेगा वही इसका भेद पा सकेगा और इस निरंकार–प्रभु का गुणगान कर सकेगा। ये निरंकार–प्रभु ही सभी जीवों को जीवन देने वाला और पालन करने वाला है।

मानव एकता दिवस (24 अप्रैल) पर विशेष

बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज के पावन वचन

★ हमारी सच्ची दौलत और सम्पत्ति हमारे बच्चे हैं। उन्हें अच्छी व सही शिक्षा देने की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। ऐसी शिक्षा से ही देश, समाज और परिवार का कल्याण हो सकता है।

★ यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सद्गुण धारण करें, उनका चरित्र व आचरण अच्छा हो, वे बड़ों का आदर करें तो ये काम पहले खुद करके दिखाने होंगे।

★ बचपन से ही बच्चों को सेवा, सुमिरण, सत्संग के साथ जोड़ने का अर्थ है– उन्हें नेक व पावन इन्सान और अच्छे नागरिक बनाना। घर में आए सन्त–महात्मा की सेवा करते समय बच्चों को आगे करो, उनके हाथों द्वारा सेवा–सत्कार करवाने चरणामृत आदि बनवाने से वे भक्ति के ये दिव्य गुण सहज में ही सीख जाते हैं।

★ सादगी व मेहनत ही बच्चों को गुणवान, चरित्रवान और स्वस्थ बनाती है।

★ बच्चे समाज की नींव होते हैं। इनके पालन–पोषण व लिखाई–पढ़ाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

★ बच्चों का ध्यान दिन–प्रतिदिन बढ़ रहे दिखावे और फैशन से हटाकर उन्हें स्पर्धा और परिश्रमी जीवन जीने की प्रेरणा देनी चाहिए क्योंकि आने वाले समय में न जाने उन्हें कौन–कौन सी जिम्मेदारियां निभानी पड़ जाएं। यदि बच्चे नाजुकमिज़ाज बन जायेंगे तो आने वाली कठिनाईयों का सामना नहीं कर पायेंगे।

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। गुरुओं–पीरों–अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही मानव कल्याण सम्भव है।

★ सेवा–सुमिरण–सत्संग ही वह तप–त्याग है जिसके द्वारा गुरसिख कर्ता व भोक्ता भाव से बच सकता है।

★ हमें भलाई व सत्कर्म कर्तव्य समझकर करने चाहिए किसी फल की इच्छा सामने रखकर नहीं। यह भी पत्थर पर लकीर है कि शुभ कर्मों का फल भी शुभ ही होता है।

★ जो प्रभु भक्त होते हैं वे प्रभु इच्छा को ही सबसे ऊपर मानते हैं। जो भी प्रभु करता है वह हमारी भलाई के लिए करता है।

★ भक्ति को पूर्ण करने का एक ही तरीका है 'एक मालिक' से नाता जोड़ना।

★ हैवानियत को इन्सानियत में बदलने और नफरत को प्यार में तब्दील करने की जरूरत ही विश्व की सबसे बड़ी क्रान्ति है।

★ सुपुत्र (गुरसिख) वही जो पिता (सद्गुरु) की आज्ञा माने अन्यथा भले ही वह कितना ही योग्य क्यों न हो पिता (सद्गुरु) को प्यारा नहीं होता।

★ मां अपने बच्चे द्वारा फैलाई जा रही गन्दगी पर ध्यान न देकर उसे साफ कर देती है। इसी तरह हमें भी किसी की बुराइयों और अवगुणों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

★ हमें अपनी कथनी और करनी में समानता लानी है क्योंकि जिनकी कथनी करनी एक होती है वही सच्चे महात्मा हुआ करते हैं।

★ अगर हम में किसी को पानी पिलाने की शक्ति है तो वह भी प्रेमपूर्वक और श्रद्धा से पिलाना है, आडम्बर को बिल्कुल महत्व नहीं देना।

कविता : हरजीत निषाद

मिलजुलकर करें सफाई

स्वच्छता अभियान है, मिलजुल कर करें सफाई।
जोश है उल्लास है, सफाई की ऋतु आई।

साफ करना घर द्वार गलियां, शर्म की कोई बात नहीं।
कोई और हमारे लिए करेगा, गर्व की यह बात नहीं।
महात्माओं तक ने की है, सदा खुद सफाई।
स्वच्छता अभियान है, मिलजुल कर करें सफाई।

थाली के किसी भी कोने में, कभी मत रखना जहर।
प्राण ले लेगा ये टूटेगा, जीवन पर बनकर कहर।
गंदगी जहर है घातक, इसे दूर रखो भाई।
स्वच्छता अभियान है, मिलजुल कर करें सफाई।

पलंग सोफे पर कूड़ा, कभी भी नहीं है रखना।
गन्दगी को पास रखने से, हमें सदा है बचना।
अच्छी सेहत अच्छे जीवन की, यह सहज दवाई।
स्वच्छता अभियान है, मिलजुल कर करें सफाई।

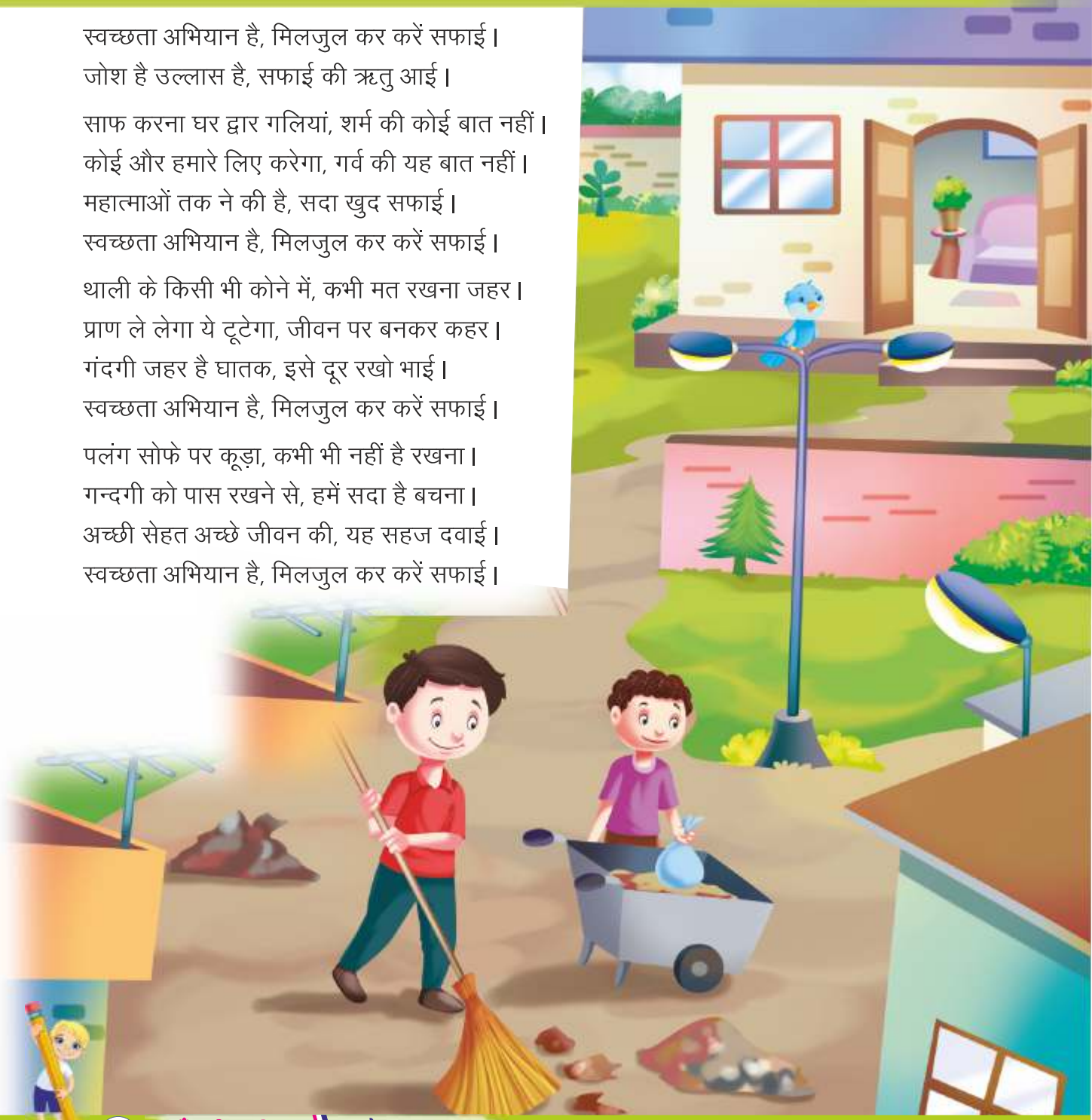

कथा : महेन्द्र सिंह शेखावत

सच्ची सेवा

बात पुरानी है। एक दिन भगवान श्रीकृष्ण के एक मित्र ने उनसे पूछा– 'आप युधिष्ठिर को धर्मराज क्यों कहते हैं?'

यह सुनकर श्रीकृष्ण बोले– क्योंकि युधिष्ठिर धर्मराज कहलाने के योग्य हैं इसलिए उन्हें धर्मराज कहना उचित है।

–युधिष्ठिर धर्मराज कहलाने के योग्य क्यों है?– मित्र ने पुनः प्रश्न किया।

तब भगवान श्रीकृष्ण बोले– इसका जवाब मैं तुम्हें सायंकाल ही दे पाऊंगा।

उस समय पांडव और कौरव सेना के बीच महाभारत का युद्ध चल रहा था। सायं को युद्ध रूकने के उपरांत रात को युधिष्ठिर अपना वेश बदलकर कुरुक्षेत्र के मैदान में जाया करते थे और सभी घायलों की सेवा–सुश्रुषा और परिचर्या करते थे।

एक दिन श्रीकृष्ण और उनका मित्र वेश बदलकर युधिष्ठिर के पीछे–पीछे यह जानने के लिए चल पड़े कि वे कहाँ जाते हैं और किसलिए जाते हैं।

आगे चलकर उन्होंने देखा कि युधिष्ठिर युद्ध के मैदान में सभी घायलों की सेवा–सुश्रुषा और परिचर्या में लगे हुए हैं। तब उन्होंने युधिष्ठिर से इस पुण्य कार्य के लिए वेश बदलने का कारण पूछा।

युधिष्ठिर ने कहा– ''यदि मैं वेश बदलकर नहीं आता तो कौरव सेना के घायल–पीड़ित व्यक्ति मुझे अपना कष्ट नहीं बतलाते और मैं इनकी सेवा के अधिकार से वंचित रह जाता, इसलिए मुझे वेश बदलना पड़ा।'' इतना सुनते ही वेश बदले हुए श्रीकृष्ण एवं उनका मित्र वहाँ से चुपचाप चल पड़े।

यह सम्पूर्ण दृश्य भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र को दिखलाते हुए कहा– इसीलिए सच्चे अर्थों में युधिष्ठिर धर्मराज कहलाने के योग्य हैं क्योंकि उनकी सेवा सबके लिए हैं, चाहे कोई उनका विरोधी ही क्यों ना हों।'

इसी कारण आज भी युधिष्ठिर को धर्मराज के नाम से भी जाना जाता है।

रोचक प्रसंग : ईलू रानी

मुहर पर नाम

एक बार एक मछुआरा खुसरो परवेज के दरबार में एक बहुत बड़ी मछली लेकर उपस्थित हुआ। बादशाह ने उतनी बड़ी मछली पहले कभी नहीं देखी थी। खुश होकर उसे तुरन्त एक हजार मुहरें इनाम में दे दी।

संयोग से मछुआरे के हाथ से एक मुहर जमीन पर गिर पड़ी। उसने झुक कर उसे उठा लिया।

बादशाह की बेगम भी वहीं बैठी थी। उसने बादशाह के कान में कहा– ये आदमी कितना लालची है। इतना धन पाकर भी संतुष्ट न हुआ। गिरी हुई मुहर भी उठा ली। ऐसा कमीना आदमी इतने बड़े ईनाम के योग्य नहीं।

यह सुनते ही खुसरो ने फौरन मछुआरे को बुलाया और कहा– क्या एक हजार मुहरें काफी न थी जो तू एक मुहर उठाने के लिए इतना बेकरार हो गया। इस लालच की तुझे क्यों न सजा दी जाये।

मछुआरा बड़ा वाक्–चतुर था। बोला– खुदावंद, हुजूर के ईनाम ने मुझे मालामाल कर दिया। मैंने वह मुहर केवल इसलिए उठा ली कि इस पर हुजूर का मुबारक नाम खुदा है। कहीं उस पर किसी का पैर न पड़ जाये।

खुसरो मछुआरे की अनोखी सूझ पर मुग्ध हो गया और उसे एक हजार मुहरें और दे दी।

गुरु की उपयोगिता

- ज्ञानवर्द्धन के लिए
- संस्कार निर्माण के लिए
- अनुशासन के लिए
- व्यवस्था के लिए
- मार्गदर्शन के लिए

सुदूर आकाश गंगा में ऑक्सीजन की पहली बार सटीक मापन

लॉस एंजिल्स। खगोलविदों ने काफी दूरी पर स्थित एक आकाशगंगा पर ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता का पहली बार सटीक मापन किया है। इससे आकाशगंगाओं के विकास को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है। ऑक्सीजन की मात्रा का पता लगाने से यह समझा जा सकता है कि आकाशगंगाओं में और उसके बाहर तत्वों का चक्र कैसा है।

'कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय' में प्रोफेसर ऐलिस शैप्ले के अनुसार 'यह अब तक की सबसे दूरी पर स्थित आकाशगंगा है जिस पर ऑक्सीजन की उपलब्धता का सटीक मापन किया गया है। यह आकाशगंगा 12 अरब वर्ष पुरानी प्रतीत हो रही है।' शैप्ले ने कहा कि 'सीओएस–एमओएस–1908' में ऑक्सीजन की उपलब्धता के बारे में पता चलना एक अहम प्रगति है। (भाषा)

उड़ते हुए सो सकते हैं पक्षी :

बर्लिन। पहली बार अनुसंधानकर्ताओं ने पता लगाया है कि उड़ते समय पक्षी बाधाओं से टकराए बगैर या आकाश से गिरे बिना ही सो सकते हैं। जर्मनी के 'मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट' के नील्स रैटेनबर्ग ने कई देशों के अपने सहयोगियों की एक टीम के साथ मिलकर 'फ्रिगेटबर्ड्स' की मानसिक गतिविधियों का अध्ययन किया और पाया कि वे उड़ते समय एक सेरेब्रल हेमिस्फेयर या एक साथ दोनों सेरेब्रल हेमिस्फेयर के साथ सो सकते हैं। हालांकि उड़ते समय वे एक घंटा से भी कम सोते हैं, जो धरती पर उनके सोने के समय का एक बहुत छोटा सा हिस्सा होता है। इसका प्रकाशन 'नेचर कम्युनिकेशन्स जर्नल' में हुआ है। (भाषा)

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

नकल में भी चाहिये योग्यता और अक्ल

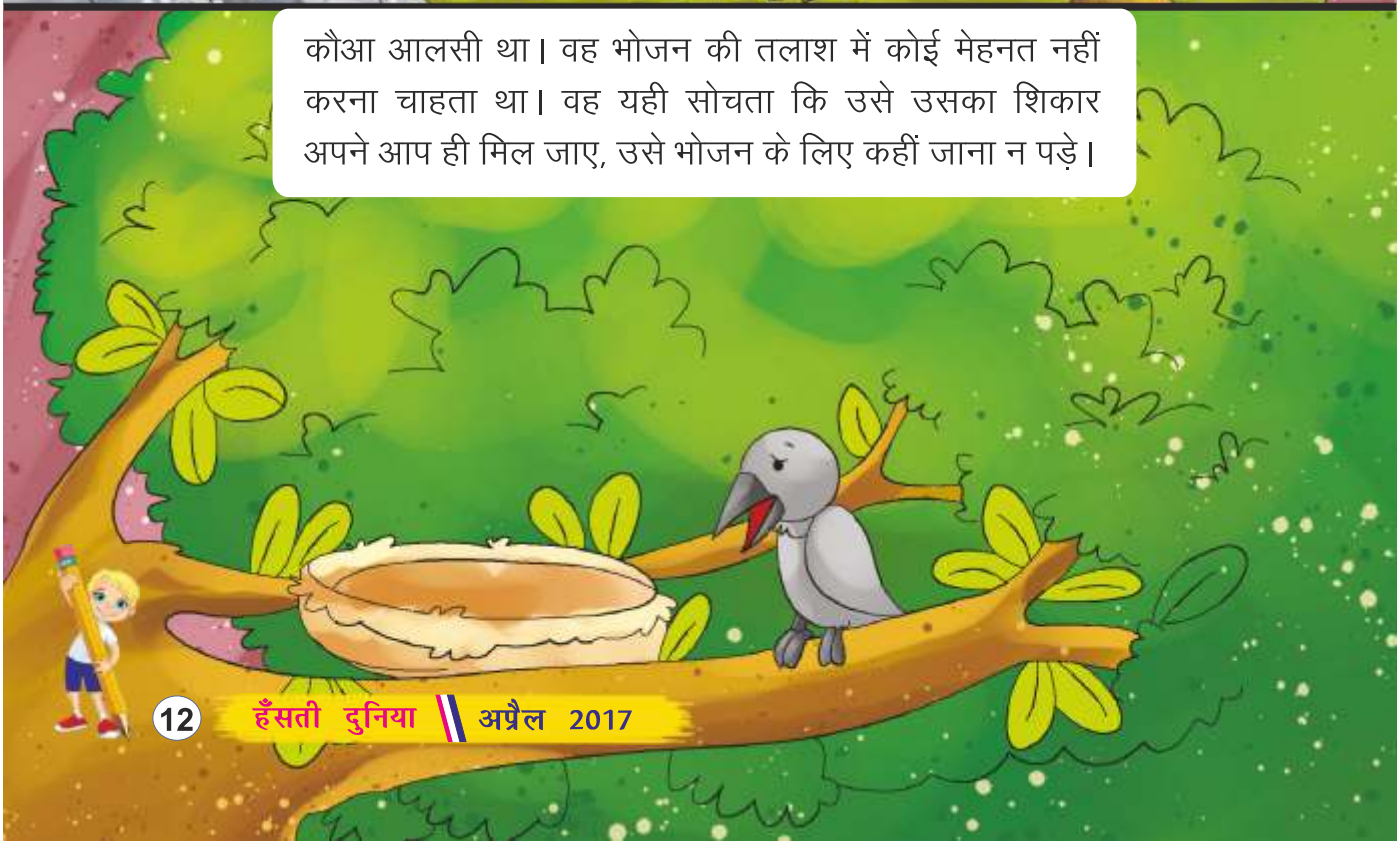

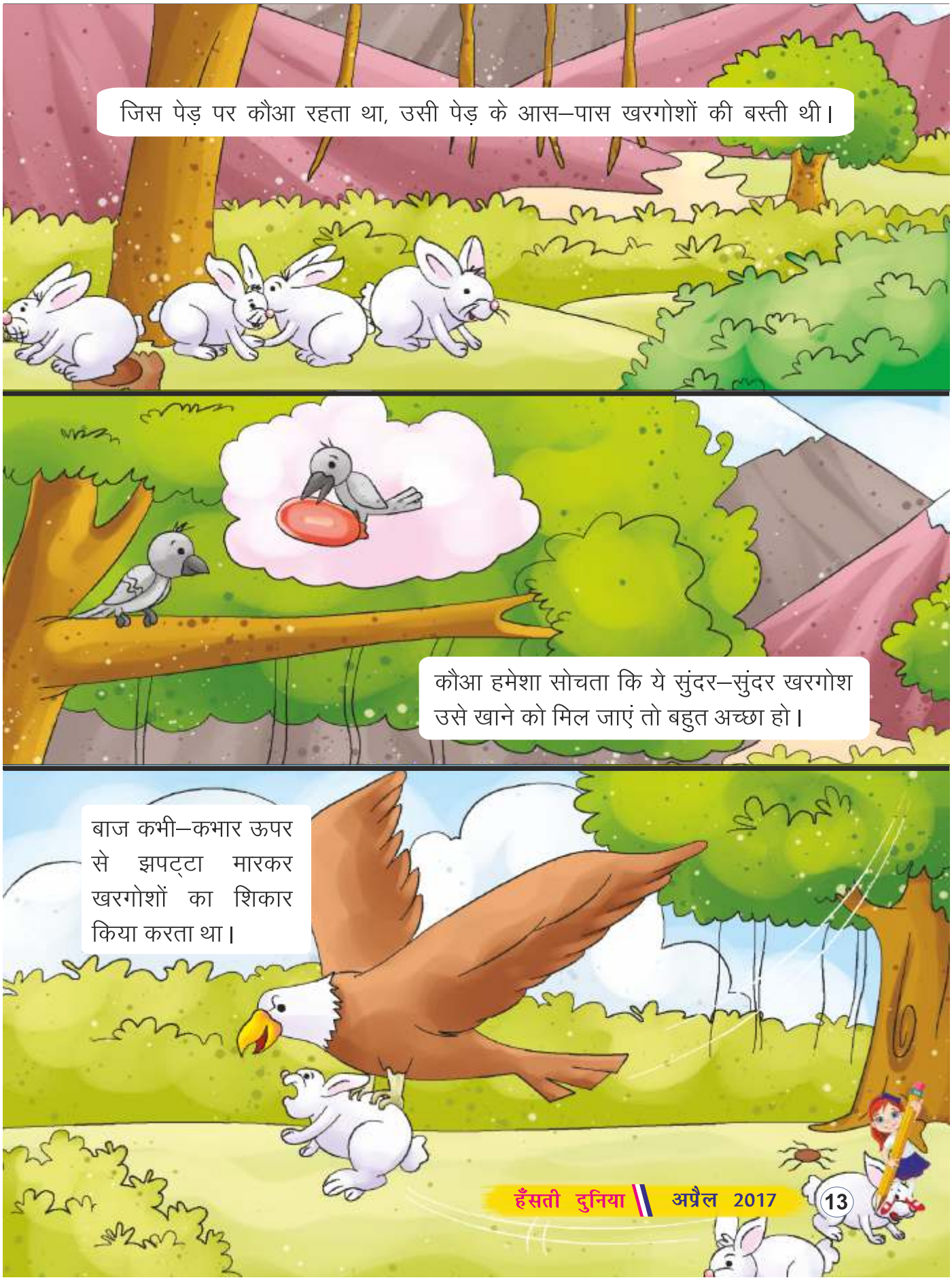
जिस पेड़ पर कौआ रहता था, उसी पेड़ के आस–पास खरगोशों की बस्ती थी।
कौआ हमेशा सोचता कि ये सुंदर–सुंदर खरगोश उसे खाने को मिल जाएं तो बहुत अच्छा हो।
बाज कभी–कभार ऊपर से झपट्टा मारकर खरगोशों का शिकार किया करता था।

एक बार कौए का भूख के मारे बुरा हाल था। उसने पेड़ की डाली पर बैठकर खरगोशों को घूमते देखा। खरगोशों को देखकर कौए के मुँह में पानी आने लगा।
कौए ने निश्चय किया कि वह भी बाज की तरह खरगोशों का शिकार करेगा।
कौआ बहुत ऊँचाई तक उड़ा और बाज की तरह तेज गति से झपट्टा मारकर एक खरगोश को पकड़ने की कोशिश की।

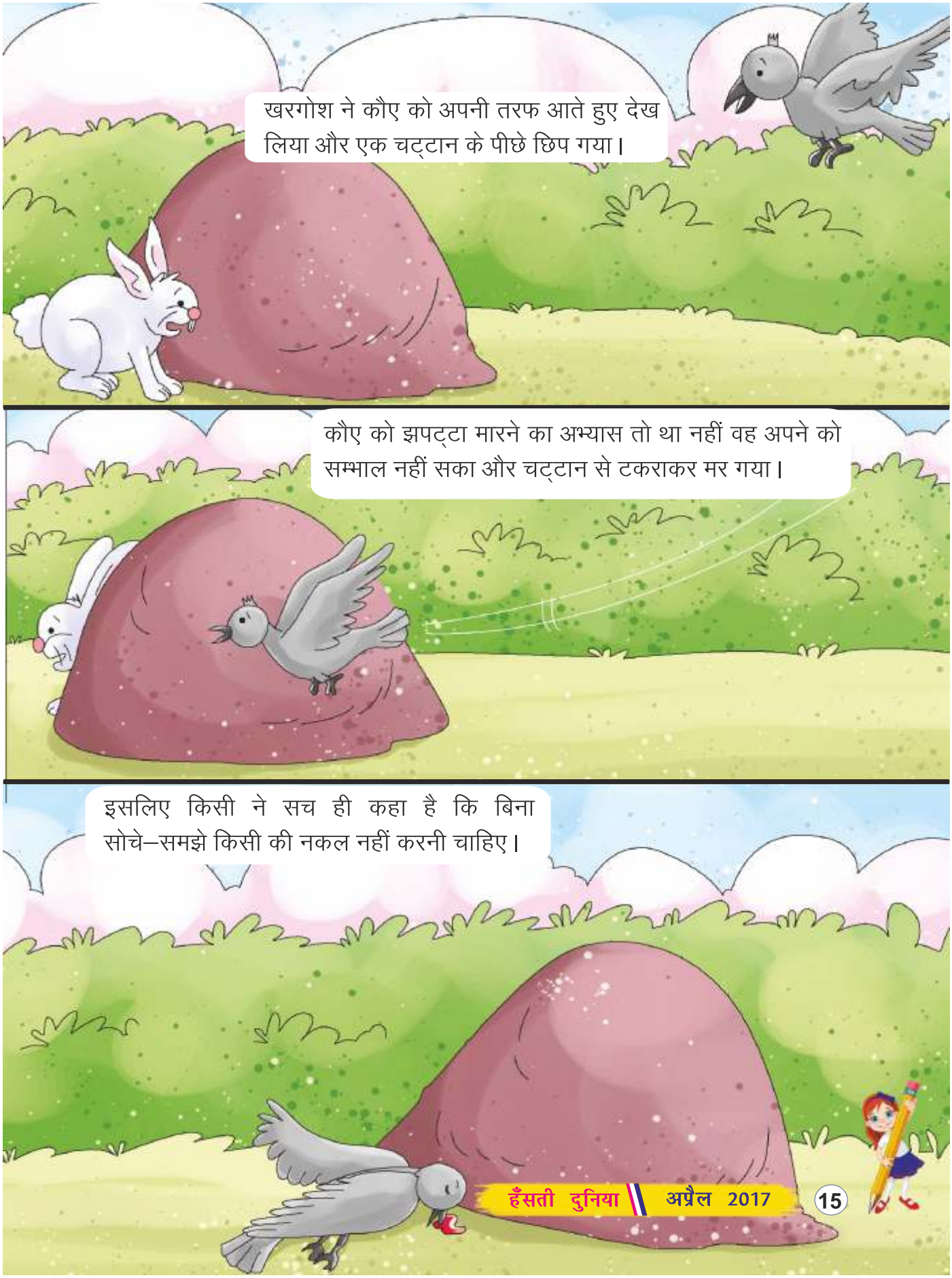
खरगोश ने कौए को अपनी तरफ आते हुए देख लिया और एक चट्टान के पीछे छिप गया।
कौए को झपट्टा मारने का अभ्यास तो था नहीं वह अपने को सम्भाल नहीं सका और चट्टान से टकराकर मर गया।
इसलिए किसी ने सच ही कहा है कि बिना सोचे–समझे किसी की नकल नहीं करनी चाहिए।

विज्ञान लेख : ईल रानी

घटता-बढ़ता चंद्रमा

दिन–दिन चंद्रमा का बढ़ना और पूर्णिमा तक पूर्णता को प्राप्त करना और फिर पूर्णिमा से अमावस्या तक लगातार घटते रहना और फिर उसका बढ़ना सचमुच एक कौतुहल का विषय है। वास्तविकता यह है कि चंद्रमा न तो घटता है और न ही बढ़ता है। सूर्य के पड़ने वाले प्रकाश की विविधता के कारण ही यह हमें घटता–बढ़ता दिखाई देता है।

चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। जिस तरह से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। ठीक उसी प्रकार चंद्रमा, पृथ्वी की परिक्रमा करता है। इसे पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगभग साढ़े उन्तीस दिन लगते हैं। यह सूर्य के प्रकाश से चमकता है। इस पर पड़ने वाला सूर्य का प्रकाश परावर्तित होकर धरती पर पहुँचता है। चंद्रमा का एक ही भाग पृथ्वी को ओर रहता है। इसका दूसरा भाग हमें दिखाई नहीं देता। जब चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच में आ जाता है तो इसका चमकने वाला भाग हमें दिखाई नहीं देता क्योंकि वह भाग पृथ्वी के विपरीत दिशा में रहता है। केवल अंधकारमय भाग ही हमारे सामने रहता है। अतः हमें चंद्रमा का कोई भाग दमकता हुआ नहीं दिखाई देता। यही अमावस्या का चंद्रमा होता है। जैसे–जैसे चंद्रमा की गति के कारण स्थितियां बदलती हैं। वैसे–वैसे इसकी सतह का कुछ भाग हमें दिखाई देने लगता है। धीरे–धीरे पूर्णिमा तक इसकी प्रकाशित सतह का दिखने वाला भाग बढ़ता जाता है और पूर्णिमा के दिन पृथ्वी से दिखने वाली सतह पूर्ण प्रकाशित हो जाती है और उसे हम पूर्णिमा का चंद्रमा कहते हैं। इस दिन पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा के बीच में होती है।

पूर्णिमा के दिन चंद्रमा चमकती तश्तरी जैसा दिखाई देता है, लेकिन घटते–घटते वह अमावस्या की रात को बिल्कुल गायब हो जाता है। चंद्रमा के इस घटने–बढ़ने को चंद्रमा की कलाएं कहा जाता है।

चांदनी रातों में प्रकृति के नज़ारे खूबसूरत दिखाई देते हैं। नदी, तालाब, झील आदि में चंद्रमा का प्रतिबिम्ब बड़ा मनोरम दिखाई देता है। पहाड़ों पर बिखरी चांदनी पहाड़ों के सौन्दर्य में चार चांद लगा देती है। रात्रि में खिलने वाले फूलों पर जब चांदनी की किरणें पड़ती हैं तो फूलों की छटा सचमुच मन मोह लेती है। शरद पूर्णिमा की चांदनी तो धरती पर एक तरह से अमृत बरसाती है। इस रात्रि में चंद्र किरणों में भ्रमण करने से शरीर के कई रोगों से छुटकारा मिलता है। त्वचा का सौन्दर्य निखरने लगता है।

घटता–बढ़ता चंद्रमा लोक जीवन के कई रंगों में रंगा है। कार्तिक अमावस्या को यानी बिन चांद के रात्रि को हिन्दू दीप पर्व मनाते हैं।

और हाँ, दादी मां और नानी मां की कहानियों में चांद को 'बच्चों का चंदा मामा' भी कहा गया है। सूरज की तरह चांद भी कुदरत का अनमोल तोहफा है।

प्रेरक कथा : कमल जैन

वचन निभाया

उन दिनों की बात है, जब मुगल बादशाह अकबर की सेना ने चित्तोड़ पर अधिकार कर लिया था और महाराणा प्रताप अरावली पर्वत की घाटियों तथा जंगलों में भटकते फिर रहे थे। युद्ध में महाराणा के अधिकांश सैनिक तो काम आ चुके थे और जो बचे थे वे बीहड़ जंगलों में, गुफाओं में छिपकर अपने दिन व्यतीत कर रहे थे। उन सैनिकों में रघुपति सिंह नाम का सरदार भी था। वह वीर तथा साहसी तो था ही, वचन का भी पक्का था। उसने कुछ साथियों की सहायता से एक छोटा सा दल संगठित कर रखा था जो अवसर मिलने पर मुगल सैनिकों पर छुट–पुट हमले कर देता और उन्हें मार–पीट कर भाग जाता....!!

मुगल सैनिक इन हमलों से बहुत परेशान थे। अतः मुगल सेनापति ने रघुपति सिंह को जीवित पकड़ने वाले को एक बड़ा पुरस्कार देने की घोषणा की।

अचानक एक दिन रघुपति सिंह को अपने इकलौते बेटे के सख्त बीमार होने की सूचना मिली। वह पुत्र को देखने के लिये व्याकुल हो उठा। साहसी तो था ही, अतः रात्रि को घोड़े

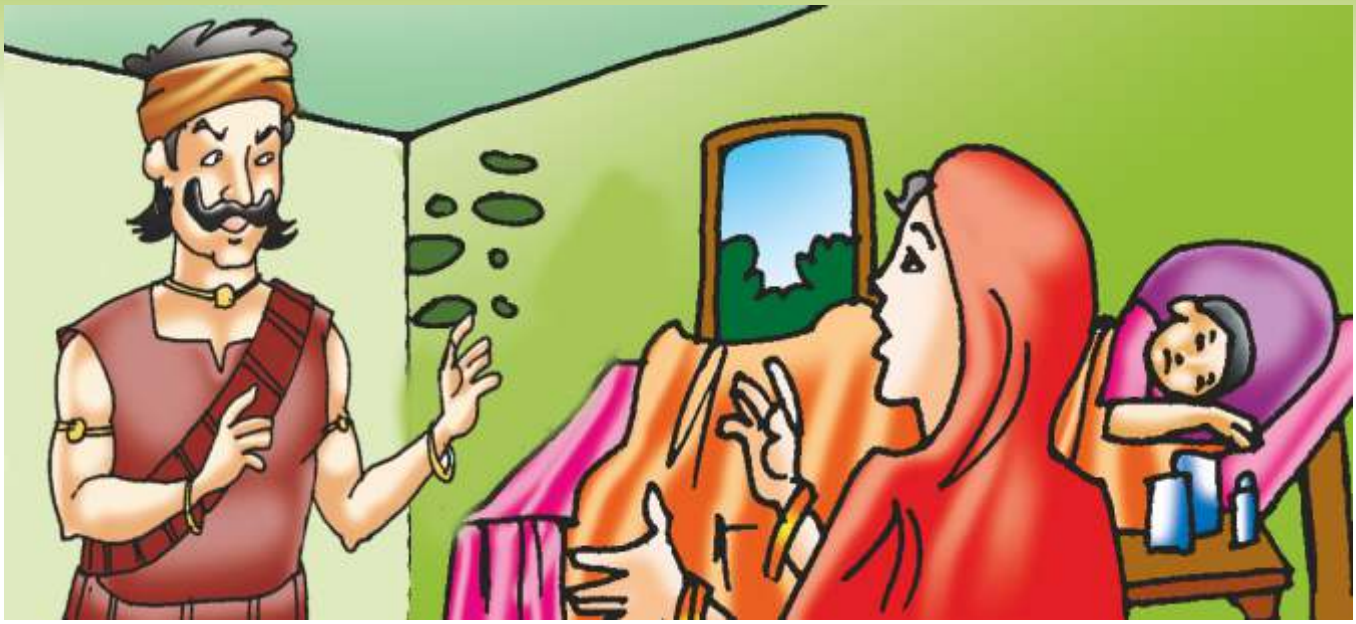

पर सवार होकर घर की ओर चल पड़ा। ज्योंही चित्तोड़ नगर के द्वार पर पहुँचा कि पहरेदार ने कड़ककर पूछा– कौन है?

रघुपति सिंह ने अपना नाम व आने का उद्देश्य बताया। घर बैठे शिकार को अपनी मांद में आया देखकर पहरेदार का चेहरा चमक उठा। वह उसे बन्दी बनाने के लिए आगे बढ़ा, पर रघुपति सिंह ने कहा– भाई! एक बार मुझे अपने बीमार बेटे को देख लेने दो। मैं चौबीस घंटे के भीतर उसकी औषधि का प्रबन्ध करके वापिस लौट आऊँगा। उस समय जैसी इच्छा हो, वैसा व्यवहार मेरे साथ करना।

पहले तो पहरेदार ने ये बात स्वीकार नहीं की। लेकिन बाद में यह सोचकर उसे जाने दिया कि जिस व्यक्ति ने अपना नाम बताने में असत्य नहीं बोला– वह विश्वासघात भी क्या करेगा?

रघुपति सिंह ने घर जाकर अपने बच्चे की दवा का प्रबन्ध किया तथा निश्चित समय पर घर से रवाना होने लगा तो पत्नी ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया। उसने उसे समझा–बुझाकर शान्त किया और कर्तव्य–पथ पर आगे बढ़ गया।

दूसरे दिन जब वह निश्चित समय पर पहरेदार के पास पहुँचा तो पहरेदार रघुपति सिंह को देखकर चकित रह गया। उसने पूछा– क्यों भाई! क्या तुम्हें मृत्यु से डर नहीं लगता, जो भागने का अवसर मिलने पर भी मृत्यु के लिए यहाँ लौट आये?

इस पर रघुपति सिंह ने बड़ी नम्रता से कहा– मैं मरने से नहीं, किसी के साथ विश्वासघात करने से डरता हूँ।

रघुपति सिंह की ईमानदारी और शूरवीरता देखकर पहरेदार बहुत प्रसन्न हुआ और बोला– तुमने मुझे वचन पर पक्के रहने का जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवनभर नहीं भूलूँगा। काश! मैं भी तुम्हारी तरह वीर और सच्चा मानव बन पाता।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

पर्यावरण के रक्षक

करों सिंचाई पेड़ की, आये सबके काम,
सबको ही छाया मिले, महके सारे धाम।

देते सबको फल–फूल, मिलते मीठे आम,
चूल्हा देखो जल रहा, लकड़ी से हर धाम।

पंछी को दे आसरा, ढोर चबाते पान,
मीठे–मीठे फल मिले, मीठा इनका नाम।

पेड़ बड़े ही काम के, ऊँचा इनका स्थान,
देते शिक्षा त्याग की, सभी कमाओ नाम।

धरती हरी–भरी रहे, हरे–भरे खलिहान,
पर्यावरण के रक्षक, ये हैं देव समान।

बाल कविता : रूपनारायण काबरा

कितना घातक पोलीथीन

करे प्रदूषण, नाली रोके,
धीमा विष है, पोलीथीन।
कपड़े का थैला अपनाओ,
दूर हटाओ पोलीथीन।।

पशुओं के जीवन को खतरा,
खाद्य पदार्थ बिगड़ जाते हैं।
रोगों को न्योता देता है,
सब कुछ इसमें सड़ जाते हैं।।

करो किनारा इस झंझट से,
बड़ी मुसीबत पोलीथीन।
ना गलता है, ना सड़ता है,
अमर प्रदूषण पोलीथीन।।

गायें खातीं, नाली रूकती।
मृदा बिगाड़े पोलीथीन।।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

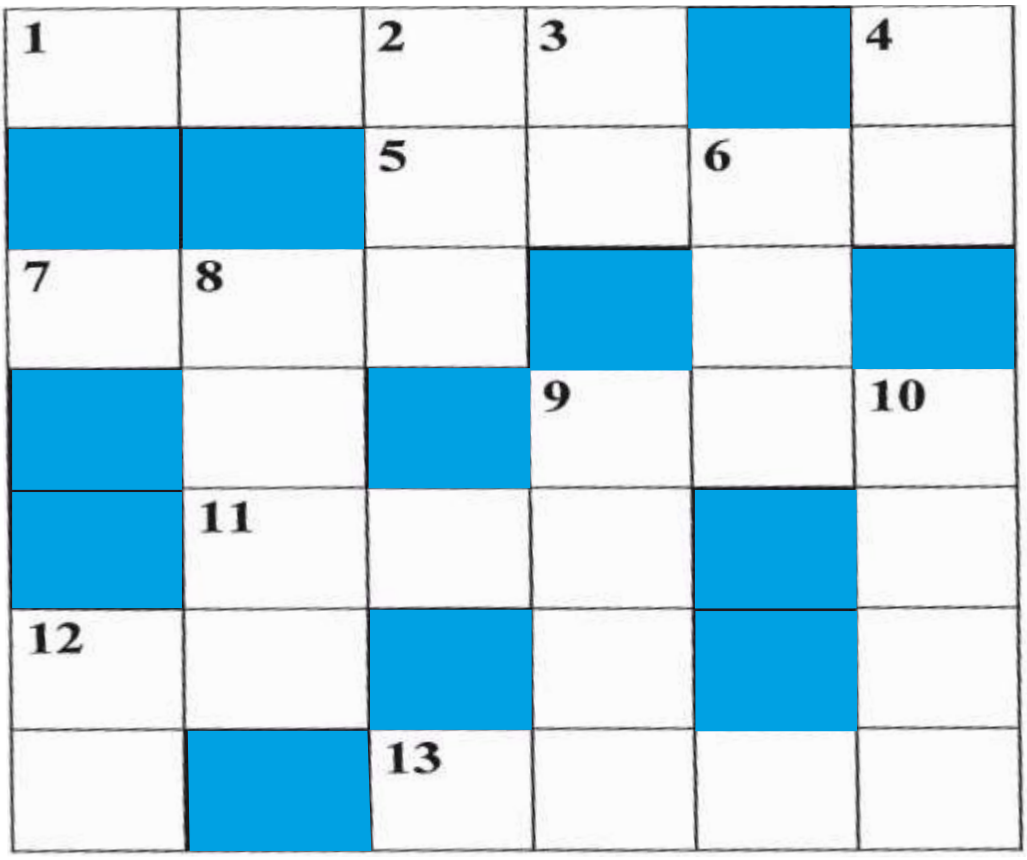

बाएं से दाएं →

1. रावण की बहन जिसकी नाक लक्ष्मण ने काट दी थी।
5. इस वाक्य में छुपे एक खेल का नाम ढूंढिए : हमारी दुकान की रखवाली बालशंकर करता है।
7. वीर का एक पर्यायवाची शब्द।
9. यूरोप का एक देश जिसकी राजधानी रोम है।
11. ..... नवरातिलोवा संसार की प्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी है।
12. जिस अंग से हम सुनते हैं।
13. बेमेल शब्द छांटिए :
    रतलाम, ऑस्ट्रेलिया, बहरीन, फिनलैंड।

ऊपर से नीचे ↓

2. तैंतीस के तीन गुणा से दस कम।
3. जिसमें कुछ न हो।
4. लुई ब्रेल ने नेत्रहीनों द्वारा पढ़ी जाने वाली किस लिपि का आविष्कार किया था?
6. आठ बिटों के समूह को .... कहते हैं।
8. भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त।
9. सूफी संत बुल्लेशाह के गुरु का नाम .... शाह था।
10. एक रासायनिक तत्व जिसकी परमाणु संख्या तीन है।
12. बनारस का पुराना नाम।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र

कबूतर किसका ?

एक बालक सुबह–सवेरे घर के निकट के पार्क में टहल रहा था। अचानक एक कबूतर उसके करीब आ गिरा। बालक ने उसे देखा। किसी ने तीर से उसे मारकर घायल कर दिया था। बालक को छटपटाते कबूतर पर दया आ गई। उसने सावधानी से कबूतर के शरीर से तीर को बाहर निकाला और तुरंत उसे घर ले जाकर उचित उपचार किया। फिर पार्क में आकर एक बेंच पर बैठकर कबूतर के स्वस्थ होने का इन्तजार करने लगा। तभी एक दूसरा बालक वहाँ आ धमका। आते ही वह बोल उठा, ''यह कबूतर मेरा है। मैंने इसे तीर से मारा है। मुझे दो।''

सचमुच दूसरा बालक तीर–धनुष के साथ वहाँ मौजूद था।

''नहीं दूँगा'' पहले बालक ने जवाब दिया।

''क्यों?'' दूसरे ने सवाल किया।

''मैंने इसे बचाया है। यह मर जाता।'' पहले ने तर्क दिया, ''इसलिए इस पर मेरा अधिकार है।''

''नहीं, मेरा है।''

''मेरा है।''

दोनों अपनी–अपनी बातों पर अड़े–डटे रहे। कोई पीछे हटने को तैयार ही नहीं था।

पार्क में टहल रहे एक बुजुर्ग व्यक्ति की नजर उन दोनों बालकों पर पड़ी। करीब आकर वह बोले, ''क्या बात है, आपस में क्यों लड़–झगड़ रहे हो?''

दोनों ने अपने–अपने पक्ष की बात उनके सामने रखी। सारी वस्तुस्थिति जानकर बुजुर्ग ने दूसरे से पूछा, ''थोड़ी देर के लिए मान लो, तुम कबूतर होते। कोई व्यक्ति तुम्हें उड़ते समय अपने तीर से घायल कर देता। तुम जमीन पर आ गिरते। तभी कोई दूसरा तुम्हें उठाकर तुम्हारे शरीर से तीर निकालकर तुम्हारी मरहम पट्टी कर तुम्हें स्वस्थ करने की कोशिश करता। इसी बीच तीर मारने वाला आकर तुम पर अपना अधिकार जताता तो उस स्थिति में तुम किसके पास जाना पसन्द करते? घायल करने वाले के पास या बचाने वाले के पास?''

''बचाने वाले के पास।'' अनायास ये शब्द दूसरे बालक के मुख से निकल पड़े।

''सही कहा,'' बुजुर्ग ने अब अपना फैसला सुनाया, ''इस कबूतर की बोली हम भले ही न समझ पाएं, मगर यह भी बचाने वाले के पास ही जाना–रहना चाहता है। अतः इस कबूतर पर तुम्हारा नहीं, बचाने वाले का अधिकार है।''

दूसरे बालक को बुजुर्ग का फैसला अच्छी तरह समझ मे आ गया। उसने पहले बालक से क्षमा मांगी।

सेल्सियस और फारेनहाइट ये दोनों वैज्ञानिक थे

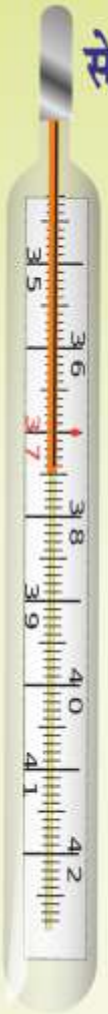

बच्चों, क्या तुम्हें पता है कि तापमान मापने के लिए कौन सी चीजें प्रयोग में लाई जाती हैं। तुम्हारे शहर का अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान कितना है? इसे तुम्हारे टी.वी. पर बताया जाता है। उसको किस प्रकार मापते हैं?

बच्चों, जिस प्रकार तरल वस्तुओं को हम लीटर में मापते हैं उसी प्रकार तापमान को भी मापने के कई यंत्र हैं। वैसे ही सेल्सियस तापमान मापने की इकाई है। सन् 1742 में स्वीडन के वैज्ञानिक ऐंडर्स सेल्सियस ने तापमान मापने के मापक यंत्र बनाये थे। अतः उन्हीं के नाम पर इसका नाम सेल्सियस रखा गया है।

थर्मामीटर का प्रयोग शरीर का तापमान मापने के लिए किया जाता है। थर्मामीटर के निचले हिस्से में तुम लोग चमकीली वस्तु देखते होंगे वह पारा यानि मरकरी होता है जो सदैव तरल अवस्था में रहता है और यदि तापमान बढ़ता है तो यही पारा थर्मामीटर में उतना ही ऊपर चढ़ जाता है।

शरीर का तापमान फारेनहाइट पैमाने द्वारा मापा जाता है। इसका आविष्कार सन् 1724 में जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने बनाया था। और इसी वैज्ञानिक के नाम पर फारेनहाइट रखा गया। जो शरीर के बुखार मापने में प्रयोग होता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

अज़ीबोगरीब संग्रहालय

किसी भी युग विशेष की संस्कृति तथा उपलब्धियों को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखने में संग्रहालयों का अपना विशेष योगदान रहता है। संग्रहालय का नाम लेते ही साधारणतः हमारे मस्तिष्क में प्राचीन मूर्तियां, अस्त्र–शस्त्रों, वस्त्रों, मुद्राओं, तथा कलात्मक कलाकृतियों, चित्रों आदि की कल्पना ही आती है, लेकिन क्या कभी आपने जूतों, टोपियों, सिगरेटों, खटमल–मक्खियों के संग्रहालयों के बारे में सुना या पढ़ा है? शायद नहीं, पर यह सच है। लेकिन, जी हाँ यह सच बात है। जर्मनी में कुछ इसी तरह के संग्रहालय तैयार किये गये हैं।

रोटी संग्रहालय : जर्मनी के एक नगर में स्थित एक संग्रहालय में प्राचीनकाल की रोटी भी सुरक्षित रखी हुई है। इस संग्रहालय में समय–समय पर खाई जाने वाली रोटी तथा उसे तैयार करने का तरीका व अन्य विवरण दिया गया है। काहिरा के एक संग्रहालय में चार हजार वर्ष पूर्व की गेहूँ की रोटी भी देखी जा सकती है।

छातों व टोपियों का संग्रहालय : जर्मनी के स्टटगार्ड नगर में छातों का संग्रहालय है। जिसमें छातों के सैकड़ों नमूने हैं। यहाँ धूप व वर्षा से बचने के लिए उपयोग में लाये जाने

वाले प्राचीनतम छातों से लेकर अत्याधुनिक एवं आकर्षक छाते भी हैं। जिन्हें आसानी से बंद करके अपनी जेब में भी रखा जा सकता है। साथ ही जर्मनी के हैम्बर्ग में टोपियों का संग्रहालय है जहाँ प्राचीन युग में उपयोग में लिए जाने वाले घास के टोप से लेकर आधुनिक फैशनदार नये से नये टोप यहाँ देखे जा सकते हैं।

तलवार व चाकुओं का संग्रहालय : जर्मनी का सॉलिंगेन शहर लोहे की वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पुरानी तलवारों तथा चाकुओं का एक संग्रहालय स्थापित है। जिसमें पिछले 400 वर्ष पुराने चाकू, छुरी, तलवारों, कैंची तथा अन्य वस्तुएं संग्रहित हैं। इस संग्रहालय में जल्लाद द्वारा प्रयोग में लाये जाने वाले खांडे से लेकर आधुनिक तलवार जो सैनिक उपयोग में लाते थे, का अनूठा संग्रह है।

माप-तोल का दुर्लभ संग्रहालय : स्टटगार्ट के निकट बेलिंजन शहर में होरेन जोलन किले में बने संग्रहालय में तोल और माप के काम में आने वाली पिछले 4,500 वर्ष की वस्तुएं व उपकरण हैं। यहाँ सन् 1763 में बनाया गया पहला पेण्डुलम मापक विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

खटमल–मक्खी संग्रहालय : ऐसे जीव–जन्तु जिनका नाम लेने तक में घृणा होने लगे, पर पश्चिम जर्मनी के असचेफनबर्ग के प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय में संग्रहित है। इसका प्रारम्भ एक ऐसे व्यक्ति ने किया जिसे खटमल– मक्खी पालने का शौक चर्राया और बस वो अपनी धुन में लग गया। जब उसके पास खटमल–मक्खियों की एक हजार प्रजातियां एकत्रित हो गईं तो उसने उसे स्थानीय निकाय के एक अधिकारी को सौंप दिया और इस तरह इनका संग्रहालय स्थापित हो गया।

जानकारी : विभा वर्मा

खासम-खास है

खसखस

खसखस को ही पोस्तादाना भी कहा जाता है। इसी के दाने से तुमने बने हुए लड्डू जाड़े में अवश्य खाये होंगे। साथ ही तरह–तरह के नमकीन एवं मीठे व्यंजन भी तैयार किए जाते हैं क्योंकि इसके दानों से प्रोटीन भरपूर प्राप्त होता है। इसके दाने से शीतल पेय भी गर्मियों में बनाये जाते हैं।

★ दूध अच्छी तरह गर्म करके उसमें शक्कर और खसखस पीसकर मिला देने से शरीर को और अधिक शक्ति प्राप्त होती है।

★ तिल और खसखस साथ में पीसकर दूध में मिलाकर सेवन से आवाज़ में भी सुधार आने लगता है।

★ एक चम्मच खसखस के दाने प्रतिदिन खाने से अपच भी दूर होता है।

पहेलियां

प्रस्तुति : मीनू सिंह (खालगांव, सीतापुर),
बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान (गल्लामंडी, गोरखपुर)

1. लम्बी गर्दन लम्बे पांव,
बोझा ढोने के आये काम।
कहलाता रेगिस्तान का जहाज,
बोलो बच्चों उसका नाम।

2. काली हूँ मतवाली हूँ,
मीठा गीत सुनाती हूँ।
अण्डे रखकर गैर घरों में,
काक को उल्लू बनाती हूँ।

3. पशुओं में है खूंखार,
और शक्ति में अपार।
भारत का राष्ट्रीय पशु,
व पशुओं का कुल सार।

4. लाल चोंच का पक्षी,
लाल कण्ठ है माला।
जो पढ़ाओ सो मैं पढ़ता,
पढ़ता नन्द गोपाला।

5. गुन–गुन करता आता,
फूलों पर मंडराता।
कमल पुष्प में छुपकर,
सारी रात बिताता।

6. बहु रंगों में रंगी हुई,
उड़ती जैसे परियां।
बच्चों को मतवाला करती,
फूलों की यह सखियां।

7. गर्मी हो तो बहने लगती,
हवा लगे सूख जाए।
आते सर्द महीना,
जा घर में छुप जाए।

8. पंख हमारे होकर भी,
कभी नहीं उड़ता हूँ।
पानी में रह कर मैं,
अपना जीवनयापन करता हूँ।

9. सिर पर उसके देखा मटका,
मटके को घर जाकर पटका।
कुछ को खाया कुछ को फेंका,
मटके का पानी भी गटका।

10. एक छोटा सा फकीर,
उसके पेट पर लकीर।

11. काली हूँ मैं काली हूँ,
काले वन में रहती हूँ।
लाल पानी पीती हूँ,
बताओ तो मैं कौन हूँ।

12. काला मुँह लाल शरीर,
पर कागज़ वह खाता।
रोज शाम को पेट फाड़कर,
कोई उन्हें ले जाता।

पहेलियों के उत्तर
किसी अन्य पृष्ठ पर देखें

बाल कहानी : फारुख हुसैन

जासूस चीकू

हरियल वन के राजा शेरसिंह काफी परेशान थे। उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। उन्होंने इंस्पेक्टर तेजू चीते को भी जल्दी से जल्दी लकड़ी चोरों को पकड़ने के लिए कहा था। लेकिन अभी तक कोई भी चोर पकड़ा नहीं गया था।

तभी महाराज शेरसिंह को अपने जासूस चीक खरगोश का ध्यान आया। उन्होंने तुरन्त ही संदेशवाहक को भेजकर खरगोश को बुलाया। महाराज शेरसिंह को पता था कि चीकू खरगोश बहुत बुद्धिमान है इसलिए वह जासूसी के काम के लिए चीकू की मदद लेने की सोची।

इधर कुछ दिनों से उनके हरियल वन में चोरी से पेड़ बहुत काटे जा रहे थे। इसलिए महाराज शेरसिंह काफी परेशान थे।

–आजकल पेड़ बहुत काटे जा रहे हैं, तुम्हें उन्हें पकड़ना है।– चीकू के आते ही शेरसिंह ने उसे आदेश दिया।

–ठीक है महाराज!– कहते हुए चीकू वहाँ से चल दिया।

वह जंगल के उस भाग में पहुँचा जहाँ पेड़ काटे जा रहे थे। वहाँ कई पेड़ काटे जा चुके थे उसे लग रहा था कि लकड़ी चोर आज भी वहीं पेड़ काटने के लिए आएंगे। वह वहीं छुप गया उसे पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। वह धीमे कदमों से उस ओर चल दिया जिधर से पत्तों की खड़खड़ाहट की आवाज आ रही थी।

चीकू खरगोश देखने लगा। पेड़ों के एक झुरमुट के पीछे से मगलू लकड़बग्घा, दीनू भेड़िया और चतुर सियार बाहर निकले। उनके हाथों में कुल्हाड़ी थी। चीकू समझ गया कि ये लकड़ी चोर हैं। वे लोग हरियल वन में ही रहते थे। वे लोग एक बड़े पेड़ को देख रहे थे। चीकू खरगोश छुपकर उनकी बातें सुनने लगा।

—हमारे काम से गज्जू हाथी बहुत खुश है और उसने काफी मोटी रकम देने के लिए कहा है।— चुतर सियार बोला।

—हमें और लकड़ी पहुँचानी होगी।— दीनू भेड़िया चतुर सियार की बात सुनकर बोला।

—अच्छा, अब हमें चलना चाहिए।— मगलू लकड़बग्घा बोला और वे लोग वहाँ से चल दिये।

चीकू खरगोश सोचने लगा कि गज्जू हाथी तो बहुत पैसे और बड़ी हैसियत वाला हे, उसे बिना सबूत के तो गिरफ्तार भी नहीं किया जा सकता है। चीकू तुरन्त वहाँ से इंस्पेक्टर तेजू चीते के पास चल दिया। उसने वहाँ पहुँचकर इंस्पेक्टर तेजू चीते को बता दिया कि लकड़ी चोरों का पता चल गया है।

—कौन हैं वे लोग।— तेजू चीते ने चीकू खरगोश से पूछा।

—वे मगलू लकड़बग्घा, दीनू भेड़िया और चतुर सियार हैं और गज्जू हाथी ने उन्हें इस काम के लिए काफी पैसा दिया है।— चीकू खरगोश ने इंस्पेक्टर तेजू को बताया।

मैं उन तीनों को तो गिरफ्तार कर लूँगा। लेकिन गज्जू हाथी तो बहुत ऊँची हैसियत वाला है। उसे बिना सबूत के गिरफ्तार नहीं

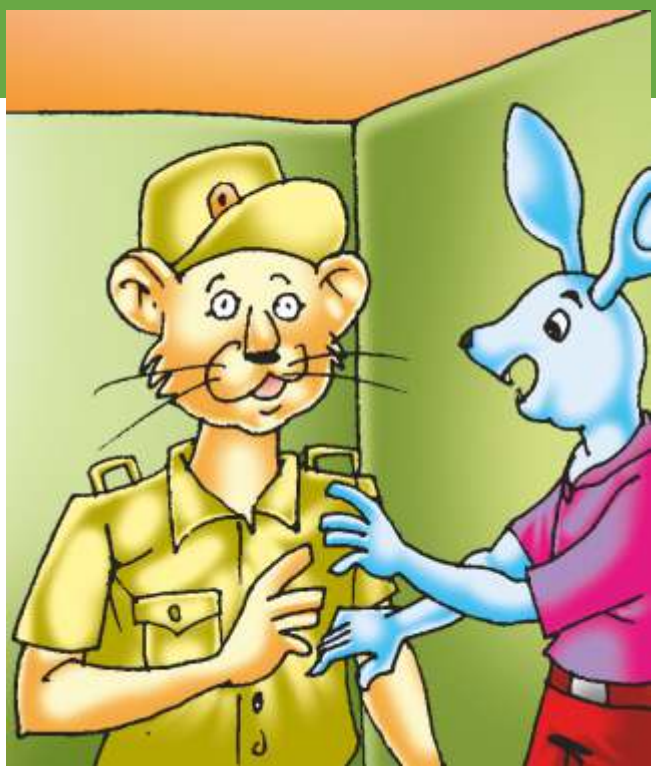

किया जा सकता।– इंस्पेक्टर तेजू चीते ने चीकू से कहा।

–उसके लिए सबूत का इंतजाम मैं कर लूँगा। लेकिन पहले आप उन तीनों को गिरफ्तार तो करिये।– चीकू खरगोश बोला और वहाँ से चल दिया। वहाँ से वह सीधा गज्जू हाथी के घर की ओर चल दिया। उसने रास्ते में एक टेपरिकॉर्डर भी ले लिया। जैसे ही वह गज्जू हाथी के घर के पास पहुँचा तभी उसे मगलू लकड़बग्घा, दीनू भेड़िया और चतुर सियार गज्जू हाथी के घर में जाते हुए दिखाई दिये। चीकू खरगोश दौड़कर गज्जू हाथी के दरवाजे पर जा पहुँचा लेकिन दरवाजा अंदर से बंद था। वह तुरन्त घर के पीछे पहुँचा और खिड़की के पीछे छिपकर टेपरिकॉर्डर 'ऑन' कर दिया। अन्दर गज्जू हाथी तीनों से कह रहा था कि मुझे और लकड़ी चाहिए कल तक और लकड़ी आ जानी चाहिए क्योंकि ऊपर से एक बहुत बड़ा ऑर्डर मिला है। अच्छा अब तुम लोग जाओ।

चीकू खरगोश भी तुरन्त वहाँ से चल दिया। वह बहुत खुश था। उसे गज्जू हाथी को गिरफ्तार करने के लिए सबूत मिल गया था। वह सीधा महाराज शेरसिंह के पास जा पहुँचा। उसने उनके सामने टेपरिकॉर्डर ऑन कर दिया। यह सुनते ही उन्होंने तुरन्त गज्जू हाथी को गिरफ्तार करने के लिए सिपाहियों को भेज दिया।

उधर इंस्पेक्टर तेजू चीते ने भी तीनों को गिरफ्तार कर लिया। सभी लकड़ी चोर पकड़े जा चुके थे।

इस काम के लिए शेरसिंह ने चीकू खरगोश को सम्मानित किया।

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

आसमान के चंदा-तारे

उजियारे की खेती करते,
अंधियारे की हस्ती हरते।

कितने प्यारे, कितने न्यारे–
आसमान के चंदा–तारे।

नियमपूर्वक आते–जाते,
वसुधा के मन को हर्षाते।

हमसे यों तो काफी दूरी,
फिर भी इच्छा करते पूरी।

बाधाओं से कभी न हारे,
आसमान के चंदा–तारे।

सुस्ती पास न आने देते,
बने इसलिए रहे चहेते।

शीतलता का पाठ पढ़ाएं,
मुफ़्त चांदनी देकर जाएं।

घर को लौटें बड़े सकारे–
आसमान के चंदा–तारे।

जीवन में चलते ही रहना,
कष्टों को भी हँसकर सहना।

नाम काम से ही होता है,
सुस्ताने वाला रोता है।

दे भटकों को सदा सहारे–
आसमान के चंदा–तारे।

वैज्ञानिक जानकारी : घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

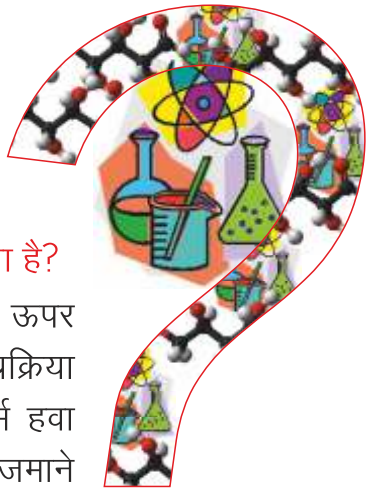

प्रश्न : रेफ्रिजरेटर (फ्रिज) में बर्फ जमाने का भाग ऊपर ही क्यों होता है?

उत्तर : गर्म हवा हल्की होकर सदैव ऊपर की ओर उठती है तथा ऊपर की ठंडी हवा नीचे की ओर आती है। ठीक यही प्रक्रिया रेफ्रिजरेटर (फ्रिज) में भी घटित होती है। फ्रिज की गर्म हवा ऊपर जाती है एवं ऊपरी हवा नीचे की ओर आती है। बर्फ जमाने का भाग ऊपर की ओर होने से पूरा फ्रिज ठंडा रहता है। साथ ही, ऊर्जा एवं रेफ्रिजरेंट (तरल पदार्थ) भी कम व्यय होते हैं।

प्रश्न : साबुन के बुलबुले गोल क्यों होते हैं?

उत्तर : दरअसल, साबुन (Soap) के बुलबुलों में वायु (Air) भरी रहती है। इस वायु के चारों ओर ही साबुन तथा पानी की परत होती है। यह परत अत्यंत पतली व लचीली होती है जिससे बुलबुले आपस में एक–दूसरे के साथ चिपकने का प्रयास करते हैं। किन्तु, मध्य में वायु होने से रूकावट आती है। उपर्युक्त परत के द्वारा जब बुलबुले में उपस्थित वायु पर दबाव (Pressure) पड़ता है, तो बुलबुले गोल आकार (Round Shape) ले लेते हैं।

प्रश्न : चलते समय तुम अपने हाथों को आगे–पीछे क्यों करते हो?

उत्तर : शरीर को संतुलित रखने के लिए ही तुम्हें चलते समय अपने हाथों को आगे–पीछे करने की आवश्यकता पड़ती है। कभी–कभी जब तुम बिना हाथ हिलाए दौड़ने अथवा चलने का प्रयत्न करते हो तो तुम्हें शरीर को संतुलित रखने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। दरअसल, चलने के दौरान शरीर के अंगों द्वारा किया गया कार्य शरीर की ऊर्जा (Energy) की न्यूनतम खपत को ध्यान में रखकर ऐसा किया जाता है।

पौराणिक कथा : नित्या त्रिपाठी

प्रायश्चित

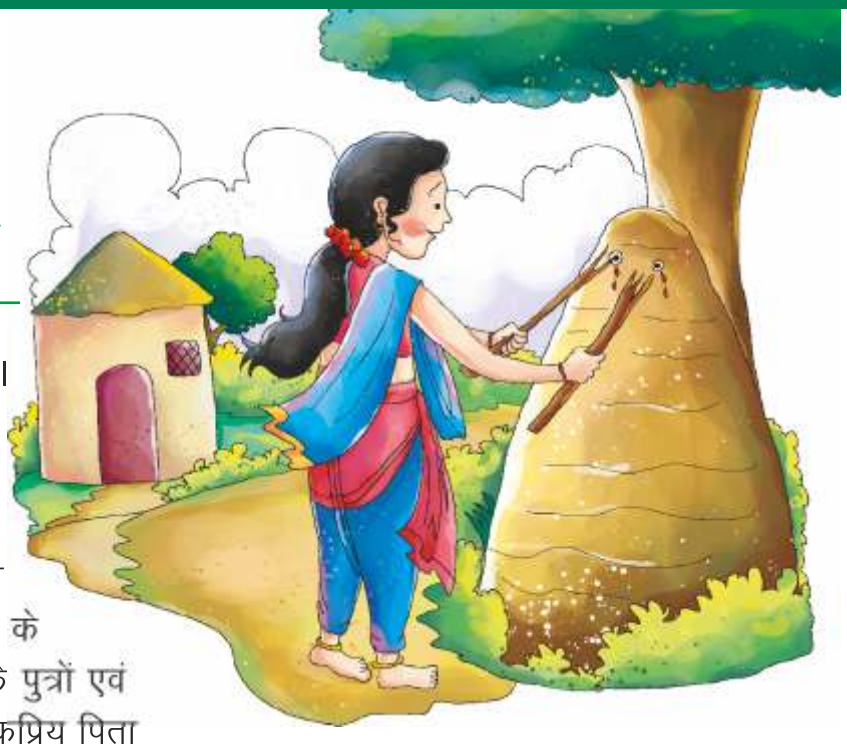

बहुत समय पहले की बात है। भारतवर्ष में उस समय महाराजा शर्याति शासन किया करते थे। वे न्यायप्रियता, प्रजासेवा तथा प्रशासनिक सेवा के लिए अति प्रसिद्ध थे। महाराजा शर्याति के सद्गुणों का व्यापक प्रभाव उनके पुत्रों एवं पुत्रियों पर भी पड़ा। वे अपने लोकप्रिय पिता के पदचिन्हों पर चलकर यश अर्जित कर रहे थे। महाराजा शर्याति अपने पुत्र–पुत्रियों के प्रति अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करते थे।

एक दिन प्रातःकाल का समय था। महाराजा शर्याति अपने पुत्र–पुत्रियों के साथ वन–भ्रमण के लिए निकले। महाराजा थके हुए थे, अतः अपनी पत्नी के साथ एक सरोवर के तट पर बैठ गए थे। उनके पुत्र व पुत्रियां घूमते हुए बहुत दूर निकल गए।

अचानक राजकुमारी सुकन्या को मिट्टी के एक छोटे से टीले में दो चमकदार मणि दिखाई दीं। कुतूहलवश सुकन्या उस मणि को देखने निकट आईं। इसके बाद भी वह चमकती हुई उस वस्तु को समझ न सकीं। तब उसने एक सूखी लकड़ी की सहायता से दोनों चमकदार मणियों को निकालने का प्रयत्न किया। मणि तो वहाँ से न निकली परन्तु वहाँ से रक्त प्रवाहित होने लगा। सुकन्या व उसके भाई–बहन यह देखकर बहुत ही घबरा गए। वे दौड़ते हुए अपने माता–पिता के पास आए और सारी बात उन्हें बताई।

महाराजा शर्याति अपनी पत्नी तथा बच्चों समेत उस स्थान पर पहुँचे और रक्त देखते ही दुःखी मन से बोले, ''बेटी! यह तो बड़ा अनर्थ हो गया। यह च्यवन ऋषि हैं जिनकी तुमने आँखें फोड़ दीं।''

पिता की बात सुनते ही सुकन्या रो पड़ी। उसका शरीर कांपने लगा। टूटते हुए स्वर में उसने कहा, ''पिताजी! मेरी जानकारी में नहीं था कि यह महर्षि च्यवन हैं। मुझसे बहुत बड़ा अपराध हुआ।'' इतना कहकर वह और भी तेजी से रो पड़ी।

''हाँ बेटी! अन्जाने में ही सही परन्तु तुमसे अपराध तो हो गया। च्यवन ऋषि यहाँ पर तपस्या कर रहे थे। आँधी–तूफान और

वर्षा के कारण इनके चारों तरफ मिट्टी का टीला बन गया है। इसी कारण तुम्हें दृष्टिदोष हो गया। तुम्हें केवल दो चमकती आँखें ही दिखीं। अब पता नहीं क्या होगा? महाराज शर्याति दुःखी हो गए।

इतने में च्यवन ऋषि के कराहने का स्वर सुनाई दिया। कातर स्वर सुनकर सुकन्या ने तुरन्त निर्णय लिया, ''मैं इस पाप का प्रायश्चित करके कठिन हानि की क्षतिपूर्ति बनूँगी।''

''तुम्हारे प्रायश्चित करने से महर्षि की आँखें वापस तो नहीं आएंगी।'' पिता शर्याति ने कहा।

सुकन्या बोली, ''मैं इनकी आँखें बनूँगी।''

''अरे! क्या कह रही हो बेटी।'' शर्याति बोले।

''मैं पूर्ण उचित कह रही हूँ पिताजी। इनके कष्ट में मेरा कष्ट व इनके सुख में ही मेरा सुख होगा। मैं भूल व क्षमा का बहाना बनाकर अपराध मुक्त नहीं होना चाहती। न्याय–नीति के समान अधिकार को स्वीकार कर चलने में मेरा व विश्व का कल्याण है। यह सब तो मैंने आपसे ही प्राप्त किया है। मैं च्यवन ऋषि से विवाह कर, उनकी आँखें बनकर सेवा–धर्म निभाऊँगी।'' सुकन्या ने कहा।

शर्याति ने कहा, ''च्यवन ऋषि जर्जर व कृशकाय शरीर के हैं और तू युवा है, यह तो बेमेल विवाह होगा।''

सुकन्या बोली, ''पिताजी! यहाँ पर योग्यता और पात्रता का प्रश्न ही नहीं उठता। मुझे तो सहर्ष प्रायश्चित करना है। मैं इस कार्य को अपना धर्म समझकर तपस्या के माध्यम से आनन्दपूर्वक पूर्ण करके रहूँगी। मुझे अपना आशीर्वाद दें।''

सुकन्या के आगे पिता की न चली और वह विवाह की तैयारी में जुट गए। महर्षि च्यवन और सुकन्या का विवाह सम्पन्न हुआ। सुकन्या की त्याग भावना देखकर देवगण भी अत्यन्त प्रसन्न हुए। सुकन्या की अल्पायु देखकर देवताओं ने च्यवन ऋषि को एक औषधि की जानकारी दी जिसे उपभोग में लाते ही ऋषि युवा हो गए। बाद में उस औषधि का नाम 'च्यवनप्राश' हुआ जिसे लोग आज भी ग्रहण करते हैं।

पहेलियों के उत्तर :

1. ऊँट, 2. कोयल, 3. बाघ, 4. तोता, 5. भंवरा, 6. तितली, 7. पसीना, 8. बतख, 9. नारियल, 10. गेहूँ, 11. जूं, 12. लैटर बॉक्स।

वैज्ञानिक तथ्य

★ पत्थर को हवा के बजाए पानी में उठाना आसान होता है क्योंकि पानी में पत्थर पर ऊपर की ओर उत्प्लावन बल कार्य करता है।

★ बादलों की चमक गर्जनें के पहले दिखाई देती है क्योंकि प्रकाश की चाल, ध्वनि की चाल से अधिक होती है।

★ खाना खाने के बाद हमें नींद आती है क्योंकि शरीर का बहुत सारा रक्त पाचन क्रिया हेतु पेट में चला जाता है और मस्तिष्क में रक्त की कमी होने से हमें नींद आती है।

प्रस्तुति : रामकुमार शर्मा

कविता : उमाशंकर यादव

हिमालय

सर उठाये गगन छूता
पर्वतों में भूप है,
देश के इस ताज का
कितना मनोहर रूप है।

जीव–जन्तु जंगल सभी
खेलते हैं गोद में,
ले हिमालय से प्रचुर जल
सरि चली है मोद में।

चूर होकर सैन्य मद में
अरि अगर आगे बढ़ा,
उत्तर दिशा प्रहरी बना यह
मान–मर्दन को खड़ा।

सर उठायें गर्व से
हम भी हिमालय सा उठें,
श्रम–साध्य है हर काम, हम–
यह गीत मिलकर गा उठें।

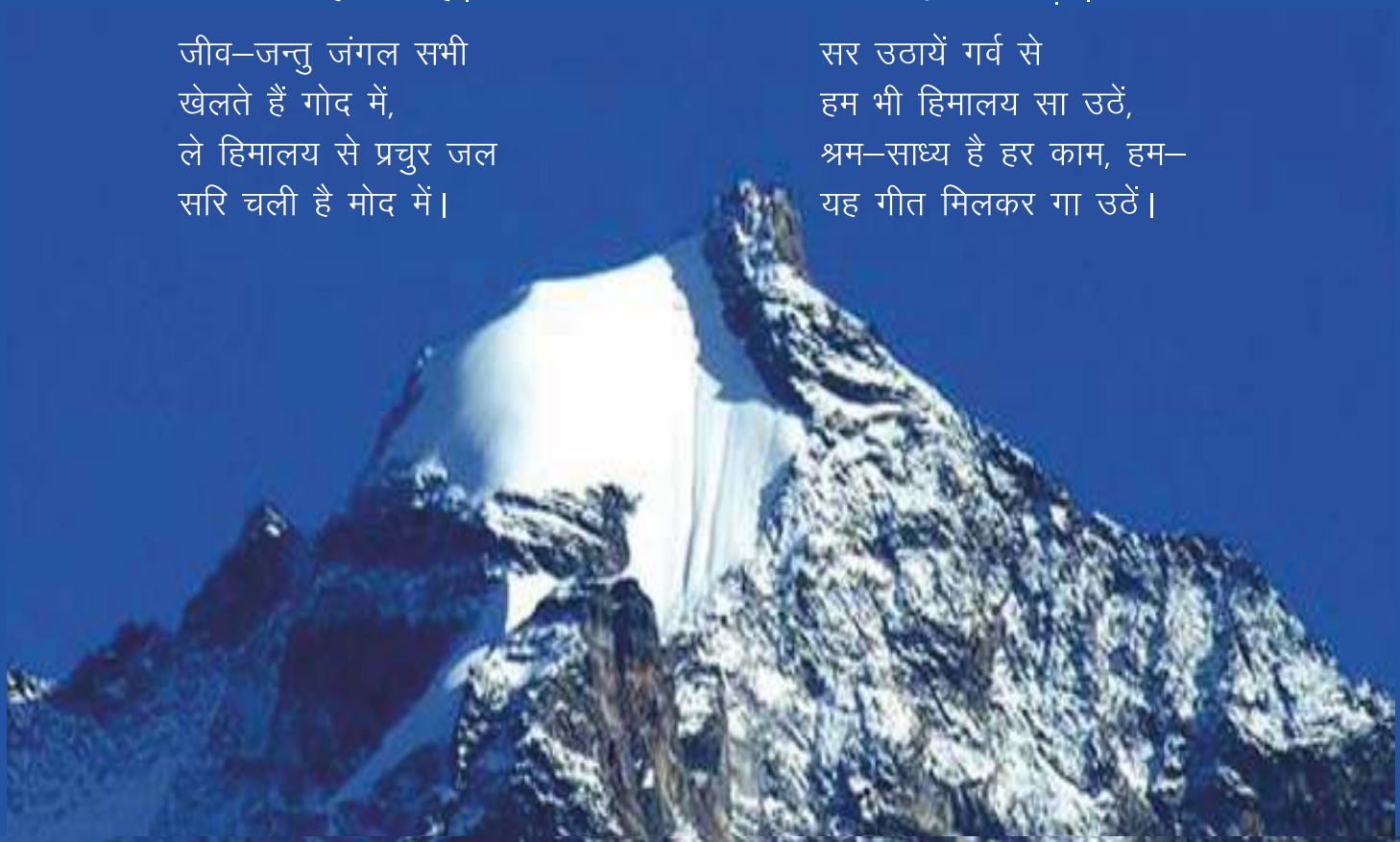

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

वाह! वाह! क्या बात है। आज तो मजे हो गए।
क्या हो रहा है ये कक्षा में? चलो, अब सब आराम से अपनी-अपनी सीट पर बैठ जाओ और पढाई शुरू करो।
मौली, मुझसे तो अभी से नहीं रहा जा रहा। राजमा-चावल सोचकर ही मुँह मे पानी आ रहा है।
किट्टी क्या हो रहा है? क्या तुम्हारा पढ़ने का मन नहीं है?

सॉरी टीचर जी, अब मैं बात नहीं करूगी।
मेरे तो अभी से पेट में चूहे कूद रहे हैं। मुझे तो अभी राजमा चावल खाने हैं।
किट्टी, तुम कक्षा से बाहर चली जाओ! क्योंकि मुझे नहीं लगता कि तुम मुझे पढ़ाने दोगी।

सॉरी टीचर जी, सॉरी, मैं तो बस यूँ ही बड़बड़ा रही थी। अब मैं किसी से बात नहीं करूँगी।
मोंटू, अपना टिफिन दो ना। मुझसे रहा नहीं जा रहा। मुझे अभी राजमा चावल खाने हैं।
किट्टी, क्या तुम्हें याद है कल मैंने सम्राट अशोक के बारे में क्या बताया था?
ओफ्फो! किट्टी, तुम मझे तो पढ़ने दो। ये लो टिफिन! जो मर्ज़ी करो।
किट्टी घबराकर ...
जी, जी। ओह! इससे अच्छा तो मैं लंच ब्रेक का इंतजार कर लेती।
हाय, मेरे राजमा चावल!
सच ही कहा है– 'जो व्यक्ति अनुशासन एवं नियम का पालन नहीं करते तथा धैर्य नहीं रखते वे खुद भी परेशान होते हैं और दूसरों के लिए भी परेशानी पैदा करते हैं।'

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश का राजकीय पशु

बारहसिंगा (Swamp Deer)

बारहसिंगा एक शानदार भारतीय हिरन है तथा यह केवल भारत और नेपाल में पाया जाता है। बारहसिंगा को अंग्रेजी में स्वैम्प डिअर कहते हैं। स्वैम्प डिअर का अर्थ होता है– दलदल में रहने वाला हिरन। दक्षिण अमरीका के कुछ भागों में भी इसी नाम का एक हिरन पाया जाता है, जो दलदलीय भागों में अवश्य रहता है, किन्तु यह भारतीय बारहसिंगा से पूरी तरह भिन्न होता है।

बारहसिंगा भारत के मध्य, उत्तर एवं पूर्वी भाग में एवं नेपाल के तराई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। यह खुले मैदानों में रहना अधिक पसन्द करता है और घने जंगलों के भीतर कभी नहीं जाता।

भारत में बारहसिंगा की दो उपजातियां पायी जाती हैं। पहली उपजाति उत्तर प्रदेश के तराई वाले स्थानों, असम के घास के मैदानों एवं सुन्दरवन की दलदली भूमि पर रहती है। इस उपजाति के बारहसिंगा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके खुर चौड़े, चपटे और बाहर की ओर मुड़े हुए होते हैं तथा खुरों की बनावट इस प्रकार की होती है कि ये दलदली और कीचड़ वाली भूमि में धंसते नहीं हैं। इन्हीं की सहायता से यह दलदलीय भूमि में सरलता से विचरण करता है। दूसरी उपजाति का बारहसिंगा मध्य भारत के घास के मैदानों में बहुतायत से देखने को मिलता है। यह कठोर भूमि पर रहने वाला हिरन है। इसके खुर छोटे और नुकीले होते हैं तथा इनकी बनावट इस प्रकार की होती है कि यह घास के मैदानों, ऊँची–नीची पहाड़ियों एवं चट्टानों पर सरलता से भाग सकता है। इस सदी के आरम्भ में यह मध्य भारत के बहुत बड़े भाग में पाया जाता था, किन्तु अब यह मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों में ही शेष बचा है।

दक्षिण भारत के कुछ भागों में भी बारहसिंगा पाया जाता है। यह मैदानी भागों में रहना विशेष रूप से पसन्द करता है। इसे घास के मैदानों में छोटे–छोटे समूह बनाकर चरते हुए प्रायः देखा जा सकता है।

बारहसिंगा एक बड़ा हिरन है। यह साँभर से कुछ छोटा होता है। इसकी लम्बाई 130 सेंटीमीटर से लेकर 240 सेंटीमीटर तक, वजन 170 किलोग्राम से 200 किलोग्राम तक तथा कंधों तक की ऊँचाई 135 सेंटीमीटर तक होती है। इसके शरीर पर ऊन जैसे बाल होते हैं तथा त्वचा का रंग भूरा या पीलापन लिये हल्का भूरा होता है। बारहसिंगा की त्वचा मौसम के अनुसार अपना रंग बदलती है। इसका रंग गर्मियों में हल्का पड़ जाता है तथा कुछ बारहसिंगों की त्वचा पर हल्की चित्तियां भी निकल आती है, जो दूर से स्पष्ट नहीं दिखाई देती। सर्दियों में बारहसिंगा बहुत सुन्दर दिखाई देता है। इस समय इसका शरीर पीलापन लिये हुए गहरा भूरा हो जाता है। बारहसिंगा की दृष्टि एवं श्रवणशक्ति सामान्य होती है, किन्तु इसकी घ्राण शक्ति बहुत तीव्र होती है। भारत में पायी जाने वाली बारहसिंगा की दोनों उपजातियों की शारीरिक संरचना में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता, किन्तु दलदल वाले भागों में रहने वाले बारहसिंगा का सिर मैदान की कठोर भूमि पर विचरण करने वाले बारहसिंगा से कुछ बड़ा होता है। बारहसिंगा के मृगशृंग (एंटलर्स) पूर्ण वृद्धि प्राप्त कर लेने के बाद कठोर और मजबूत हो जाते हैं तथा इनका आवरण इनसे अलग हो जाता है।

बारहसिंगा का अर्थ होता है– बारहसींगों वाला हिरन, किन्तु सभी के बारह सींग अर्थात् शाखाएं नहीं होती। बारहसिंगा के मृगशृंगों की प्रायः 10 से 14 के मध्य शाखाएं अथवा उपशाखाएं होती हैं एवं कुछ बारहसिंगों में तो इनकी संख्या 20 तक देखी गयी है। इसके मृगशृंगों की लम्बाई 13 सेंटीमीटर से 75 सेंटीमीटर के मध्य होती है। अभी तक इसके मृगशृंगों की अधिकतम लम्बाई 104.1 सेंटीमीटर पायी गयी है, किन्तु इतने लम्बे मृगशृंग बहुत कम हिरनों के होते हैं।

बारहसिंगा के मृगशृंग अन्य हिरनों के समान प्रतिवर्ष अथवा एक निश्चित समय पर गिर जाते हैं और इनके स्थान पर नये मृगशृंग निकलते हैं। नये मृगशृंग आरम्भ में कमजोर और खोखले होते हैं। इनका रंग लाली लिए भूरा–सा होता है और इन पर एक विशेष प्रकार के चमड़े का आवरण होता है।

बारहसिंगा समूह में रहने वाला हिरन है। यह प्रायः 30 से 50 तक के समूह में विचरण करता है, किन्तु कभी–कभी सैकड़ों के समूह में भी देखा गया है। बारहसिंगा के समूह का आकार सदैव बदलता रहता है। कभी इसके समूह में हिरनों की संख्या बहुत कम हो जाती है तो कभी बहुत अधिक। मौसम के अनुसार इसके समूह में निश्चित रूप में परिवर्तन होता है, किन्तु एक दिन में भी इसके समूह का आकार बदल सकता है। इसमें नर और मादा अपना अलग–अलग समूह बनाते हैं। इसके साथ ही समान आयु के अल्पवयस्क बच्चे भी अपना अलग समूह बनाते हैं। नवजात बच्चे तथा छोटे बच्चे सदैव अपनी माँ के साथ मादाओं के झुंड में रहते हैं। कभी–कभी नर–मादा और छोटे बच्चों के मिश्रित समूह भी देखे गये हैं प्रायः नर और मादा वयस्कों का समूह अल्पवयस्क बारहसिंगों के समूह से छोटा होता है।

बारहसिंगा साँभर के विपरीत खुले मैदानों में चरता है। इसका प्रिय भोजन छोटी–छोटी झाड़ियां, घास और जंगली वनस्पति है। बारहसिंगा के सभी समूह चरते समय

एक–दूसरे से मिल जाते हैं और शांतिपूर्वक चरते हैं। यह प्रातःकाल सूर्योदय के बाद अपने समूह के साथ चरने के लिए निकलता है और दोपहर में कड़ी धूप होने के पूर्व तक चरता है। इसके बाद यह किसी वृक्ष की छाया में आराम करता है। शाम को यह सूर्यास्त के बाद कुछ देर और चरता है, किन्तु अधिक रात्रि होने के पहले ही किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाता है। बारहसिंगा साँभर की तुलना में कम रात्रिचर है।

बारहसिंगा सदैव भोजन के बाद दोपहर और रात्रि में घने वृक्षों की छाया में अपने समूह के साथ आराम करता है। इस समय समूह का नेतृत्व और सुरक्षा एक अनुभवी और प्रौढ़ मादा करती है। यह हमेशा सजग रहती है और खतरे की आशंका होने पर पूरे समूह को सावधान करती है। बारहसिंगा का समूह खतरे का आभास होते ही एक विशेष प्रकार की चीख मारकर विपरीत दिशा की ओर भाग खड़ा होता है एवं किसी सुरक्षित स्थान पर जाकर आश्रय लेता है।

लगभग सात माह के गर्भकाल के बाद मादा बारहसिंगा एक बच्चे को जन्म देती है, किन्तु कभी–कभी जुड़वाँ बच्चे भी होते देखे गये हैं। जन्म के समय बच्चों के शरीर पर चित्तियां होती हैं, जो धीरे–धीरे समाप्त हो जाती हैं।

बारहसिंगा बच्चे का पालन–पोषण केवल मादा ही करती है। वह सर्वप्रथम अपने बच्चे को किसी ऐसे सुरक्षित स्थान पर ले जाती है, जहाँ हिंसक जीवों का खतरा न हो। वह उसे दिन में 4–5 बार अपना दूध पिलाती है और इस मध्य उसे प्यार से चाटती रहती है। लगभग एक महीने में बच्चा बड़ा हो जाता है और अपनी माँ के साथ घास चरने लगता है। मादा बारहसिंगा प्रायः एक वर्ष तक बच्चे को दूध पिलाती है एवं अपने साथ रखती है।

दो बाल कविताएं : राजकुमार जैन 'राजन'

इंटरनेट

विश्व में उपलब्ध है आज तक
हर विषय की जो भी जानकारी,
घर बैठे मिनटों में मिल जाती है
'इंटरनेट की हो गई बलिहारी।'

हर काम को आसान बनाकर
विश्व को एक सूत्र में बांध दिया,
रोजमर्रा जीवन का अंग बनकर
मानव–जीवन को साध लिया।

इंटरनेट पर पल भर में ही भैया
विश्व भर की खबरें आ जाती,
दुनिया भी विषयों की जानकारी
पलक झपते ही पा जाती।

कम्प्यूटर युग का हुआ कमाल
इंटरनेट घर–घर में छा रहा,
तेज रफ्तार बदलते युग में
विश्व सारा हथेली में आ रहा।

रोबोट एक दिला दो

रोबोट एक दिला दो राम
सहज सरल हों सारे काम,
साथ रहेगा सदा हमारे
'रोबू' होगा उसका नाम।

भारी भरकम बस्ता मेरा
स्कूल यही ले जाएगा,
होम वर्क भी झट से करके
साथ खेलने आएगा।

रोबोट किया करेगा अब से
घर भर का सारा ही काम,
मम्मी को भी मिल जाएगा
पल भर को थोड़ा आराम।

कभी बोर होऊंगा मैं तो
बात करेगा प्यारी–प्यारी,
करवाओ चाहे जो कुछ भी
नहीं कहेगा बिलकुल 'सॉरी'।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

सुनहरे हंस

बहुत समय पहले की बात है। सूर्यनगर में विक्रम सिंह नाम का एक राजा राज्य करता था। उसके महल में बहुत सुन्दर बाग था। बाग में स्वच्छ जल से भरी एक नीली झील थी। उस झील में सुनहरे पंख वाले बहुत से हंस रहते थे।

वे हंस राजा को हर दिन एक सुनहरा पंख दिया करते थे। राजा उसे अपने खजाने में रख देता।

एक बार सुनहरे पंखों वाला एक बहुत बड़ा हंस कहीं से उड़ता हुआ नीली झील पर आया। जैसे ही वह पानी में उतरने लगा, झील में रहने वाले हंसों ने कहा, "हम तुम्हें झील में नहीं उतरने देंगे। हम यहाँ रहने का

मूल्य चुकाते हैं। राजा को एक पंख रोज देते हैं।''

बाहर से आए हंस ने कहा, ''इतना गुस्सा मत करो। मैं भी बारी आने पर तुम्हारी तरह अपना एक पंख दे दिया करूंगा।''

''नहीं, नहीं हम बाहर से आए किसी भी हंस को यहाँ नहीं रहने देंगे।'' हंसों ने एक स्वर में कहा।

बड़ा हंस हठधर्मी पर उतर आया तो झगड़ा बढ़ गया ''ठीक है, यदि मैं यहाँ नहीं रह सकता तो तुम्हें भी नहीं रहने दूंगा।'' इतना कहकर बड़ा हंस महाराज विक्रम सिंह के दरबार में पहुँच गया।

''महाराज, आपकी नीली झील में रहने वाले हंस मुझे नहीं रहने देते। मेरे वहाँ रहने से आपको लाभ ही होगा। मेरा पंख झील के सभी हंसों के पंखों से बड़ा है। मैंने जब उनसे कहा कि मैं महाराज के पास जाता हूँ, तो बोले हमें किसी महाराज का डर नहीं है।'' बड़े हंस ने राजा को भड़काते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर राजा विक्रम सिंह आगबबूला हो गए– ''मेरी नीली झील में रहने वाले इन हंसों की यह मजाल।''

तुरन्त उसने सैनिकों को बुलाया और आदेश दिया, ''नीली झील में रहने वाले सभी हंसों को मौत के घाट उतार दो। मुझे अब उनकी जरूरत नहीं। मुझे अब बड़ा पंख मिलने लगेगा।''

राजा का आदेश पाकर सैनिक तलवार उठाये हंसों को मारने दौड़ पड़े। हंसों ने उन्हें दूर से हथियार सम्भाले आते देखा तो उनका माथा ठनका। एक बूढ़े हंस ने कहा, ''साथियो, बचने का एक ही रास्ता है, यहाँ से उड़ चलो।''

सारे हंस एक साथ आकाश में उड़ गये। नीली झील हंसों से खाली हो गई तो सैनिक राजदरबार में आए। राजा को सभी बातें विस्तृत रूप से सूचित कीं।

राजा बहुत प्रसन्न हुआ। फिर बड़े हंस से बोला, ''अब मेरी झील केवल आपके लिए है।''

बड़ा हंस बोला, ''क्षमा करें, राजन! आपका न्याय मुझे पंसद नहीं आया। इस तरह तो कल यदि मुझसे भी बड़ा हंस आ गया तो आप मुझे भी मरवा डालेंगे।''

यह कहकर उसने अपने पंख फड़फड़ाये और उड़ गया। लालच के कारण राजा को सब हंसों से हाथ धोना पड़ा।

दिलचस्प सच

दुनिया में इस समय करीब 6500 भाषाएं बोली जाती हैं। हालांकि इनमें से 2000 भाषाएं ऐसी भी हैं जिनके बोलने वाले सिर्फ 1000 लोग ही हैं। क्या आपको पता है कि सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा कौन सी है? अगर आपका जवाब अंग्रेजी है तो हम बता दें कि सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा मंडारिन चाइनीज है। करीब 88.5 करोड़ से ज्यादा लोग इस भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

पढ़ो और हँसो

दो मूर्ख एक पेड़ की डाल से लटके थे तभी एक मूर्ख नीचे गिर गया।

पहला बोला – क्यों थक गये?

दूसरा बोला – यार थका नहीं पक गया।

★ ★ ★——★ ★ ★

जंगल में हाथी जा रहा था। उसके पीछे दो चूहे आ रहे थे।

एक चूहा दूसरे चूहे से बोला– इस हाथी से पुराना हिसाब चुकाना है, तू बोले तो इसे लंगड़ी मार कर अभी गिरा दूँ?

दूसरा चूहा बोला– रहने दे यार, हम दो हैं और वह अकेला। लोग क्या सोचेंगे? दो चूहों ने मिलकर एक बेचारे हाथी को गिरा दिया।

★ ★ ★——★ ★ ★

मोनू : बताओ हम दोनों में सबसे बुद्धिमान कौन है?

सोनू : मैं अपनी तारीफ नहीं करना चाहता।

मोनू : अच्छा, तो बताओ हम दोनों में से बेवकूफ कौन है?

सोनू : मैं तुम्हें दुखी नहीं करना चाहता।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

★ ★ ★——★ ★ ★

लाली : अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?

मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

★ ★ ★——★ ★ ★

डाकू : (सेठ से) बोलो सेठ, जान देते हो या माल?

सेठ : भाई जान ही ले लो, माल तो बुढ़ापे तक काम आयेगा।

★ ★ ★——★ ★ ★

मरीज : (नर्स से) क्या डाक्टर साहब ने अभी तक नींद की गोलियां नहीं भेजी?

नर्स : जी नहीं।

मरीज : जल्दी मंगवाओ, मुझे नींद आ रही है अब मैं गोलियों के इंतजार में और नहीं जाग सकता।

★ ★ ★——★ ★ ★

माँ : (निष्ठा से) अरे तेरी बहन को स्कूल से छुट्टियां मिलने पर तू क्यों रो रही है?

निष्ठा : अगर मैं भी स्कूल जाती होती तो मुझे भी छुट्टियां मिलतीं।

★ ★ ★——★ ★ ★

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

पहला बच्चा : (दूसरे बच्चे से) तुम्हें पता है मेरे पापा के एक इशारे से सैकड़ों गाड़ियां चलती और रूकती हैं।

दूसरा बच्चा : तब तो तुम्हारे पापा कोई बहुत बड़े अधिकारी होंगे?

पहला बच्चा : नहीं! वे तो ट्रैफिक हवलदार हैं।

– उर्मिला (मुंबई)

★ ★ ★——★ ★ ★

नवीन : (चौकीदार से) रामलाल, तुम रात को पहरा देते समय 'जागते रहो' ही क्यों बोलते हो?

चौकीदार : साहब इसलिए कि आप लोग जागते रहें और मैं सो जाऊँ।

★ ★ ★——★ ★ ★

संटी पार्किंग में अपनी कार के पहिए निकाल रहा था।

बंटी : ओए ये क्या कर रहा है?

संटी : कार के दो पहिये निकाल रहा हूँ।

बंटी : लेकिन तू पहिये क्यों निकाल रहा है? ये तो देखने में ठीक लग रहे हैं।

संटी : देख नहीं रहा, यहाँ लिखा है, 'ओनली टू व्हीलर पार्किंग'।

★ ★ ★——★ ★ ★

शिवम की माँ की तबीयत खराब हो गई।

डॉक्टर : टेस्ट होंगे।

शिवम : हे भगवान अब क्या होगा? मेरी माँ तो अनपढ़ है।

– गुरचरन आनन्द (लुधियाना)

★ ★ ★——★ ★ ★

संटी : (पहलवान से) तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो?

पहलवान : कम से कम दस।

संटी : बस, तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है जो सुबह पूरे मुहल्ले को उठा देता है।

★ ★ ★——★ ★ ★

एक चोर को चोरी के जुर्म में जीप में बैठाकर ले जाया जा रहा था।

सिपाही ने पूछा – तुम इतने खुश क्यों हो?

चोर बोला – आज मैं पहली बार जीप में बैठा हूँ, इसलिए।

★ ★ ★——★ ★ ★

मोहन : यार मैं अपना पर्स घर भूल आया हूँ, मुझे 1000 रू. की जरूरत है।

सोहन : कोई बात नहीं। एक दोस्त ही दोस्त के काम आता है। ये लो 10 रुपये। घर जाकर अपना पर्स ले आओ।

– वीना कारवानी (आगरा)

वर्ग पहेली के सही उत्तर

1 शू	र्प	2 न	3 खा		4 ब्रे
		5 वा	ली	6 बा	ल
7 सा	8 ह	सी		इ	
	नु		9 इ	ट	10 ली
	11 मा	र्टि	ना		थि
12 का	न		य		य
शी		13 र	त	ला	म

कभी न भूलो

- वहम और सत्य साथ नहीं चल सकते।
- जो त्याग दिल से नहीं होता है वह स्थिर नहीं होता है।
- मनुष्य अपने विचार का पुतला है।
- श्रद्धा की परीक्षा सबसे कठिन अवसर पर होती है।
- उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं, जिसे आप काम में नहीं लेते।
- झूठ आत्मा को खा जाता है, सत्य आत्मा को पुष्ट करता है।
- जो व्यक्ति ऊँचे विचारों की सुखद संगति में रहते हैं, वे कभी अकेले नहीं हो सकते।
- थोड़ा पढ़ना, ज्यादा सोचना, कम बोलना, ज्यादा सुनना यही बुद्धिमान बनने के उपाय हैं।
- ज्ञानी लोग फल की प्राप्ति नहीं होने पर शोक नहीं करते।
- संसार में वही जीव निरोग रह सकता है, जो अपना जीवन उत्तम चरित्र के साथ बिताता है।
- आज पढ़ना लगभग सभी जानते हैं पर क्या पढ़ना चाहिए यह प्रायः नहीं जानते।
- जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए केवल करना शेष रह जाता है।
- व्यक्ति जब एक नियम तोड़ता है तो दूसरे अपने आप टूट जाते हैं।
- किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है।
- छोटी–छोटी बातों में ही हमारे सिद्धान्तों की परीक्षा होती है।
- बगैर भीतर की शांति के बाहरी शांति कुछ काम की नहीं है।
- जो कभी न हर्षित होता है, न द्वेष करता है न शोक करता है वह भक्त परमात्मा को अधिक प्रिय है।
- स्वतंत्रता और शक्ति जिम्मेदारी लाती है।
- आदमी का व्यक्तित्व उसकी अपनी कमाई है।
- ज्ञान गहरे सागर के समान है।
- समय कीमती है, पर सत्य उससे भी ज्यादा कीमती है।
- काम करने से हमेशा आनन्द भले ही न मिले, बिना काम किए तो कदापि नहीं मिलता।
- नकल करके आज तक कोई महान नहीं बन सका।
- क्रोध सदैव मूर्खता से शुरू होता है तथा पश्चात्ताप पर समाप्त।
- मनुष्य जिससे भय खाता है उससे प्रेम नहीं करता।

– निरंकारी बाबा

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं और मेरा परिवार इसका बेसब्री से इंतजार करता है। दिसम्बर अंक में कहानियां 'कालू कौआ और मयंक मोर' (हरजीत निषाद) तथा 'सच्चा सम्मान' (राजकुमार जैन राजन) शिक्षाप्रद हैं।

स्तम्भों में भी 'पहेलियां', 'कभी न भूलो' एवं 'पढ़ो और हँसो' भी अच्छे थे।

कविताएं 'खेलो खेल खेल भाव से' (राधेलाल 'नवचक्र') तथा 'साफ करो अपना घर आंगन' (प्रियंका भारद्वाज) भी अच्छी लगीं।

मैं और मेरे घर वाले बस इतना कह सकते हैं कि हँसती दुनिया एक अच्छी पत्रिका है और यह सन्देश देती है कि–

हँसती दुनिया पढ़ते जाओ,
सबको अच्छा बनाते जाओ।

– वैभव किशोर (डांगोली बांगर)

शाबाश बच्चो!

जब मैं छोटा बच्चा था,
चीनी खूब खाता था।

खुजली हो गई,
सारा दिन खुजलाता था।
वैद्य कड़वी दवा पिलाता था,
मैं रोता था।

चीनी के दिन खत्म हुए अब
चॉकलेट, फ्रूटी,
पेस्ट्री बच्चा स्कूल में खाता है
दांत खराब,
अरे नहीं, टूट कर गिर जाता है
खाना हज़म नहीं हो पाता है
भूख नहीं लगती है
रोग बढ़ता जाता है।

पिता की सारी कमाई डॉक्टर ले जाता है,
बड़ा हुआ वह रोगी बच्चा तब पछताता है,
चॉकलेट, पेस्ट्री खाने वाला फिर पछताता है।

जामुन खाओ, खरबूजा खाओ, करेला खाओ,
निम्बू खाओ, रोग भगाओ, खुश हो जाओ।
खुद हँसो मित्रों को हँसाओ,
फुटबॉल खेलो, हॉकी खेलो,
सामान्य ज्ञान बढ़ाओ।
अध्यापक कहे–
शाबाश! बच्चो,
आओ मेरे गले लग जाओ।

– मोहन लाल (दिल्ली)

फरवरी अंक का रंग भरो परिणाम

1

असीम कुमार
आयु 9 वर्ष
139–ए, मालवीय नगर,
दिल्ली

2

नवनीत बधन
आयु 13 वर्ष
गाँव एवं पोस्ट : किन्नू,
जिला : ऊना (हि. प्र.)

3

रवनीत कौर
आयु 9 वर्ष
गाँव : चोगावा सादपुर,
जिला : अमृतसर (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सुहावनी (मोतिया खान, दिल्ली), महक राजू (मालवीय नगर, दिल्ली), धैर्य गड़ाही (चकराता रोड, देहरादून), दीप्ति राणा (धनास, चण्डीगढ़), प्रेम प्रकाश (वार्ड नं. 38, सरदार शहर), कनिका सिंह (शिवपुर, पौढ़ी गढ़वाल), ज्योति भसीन (रेस्ट कैम्प, देहरादून), मीनाक्षी आनन्द (जूहीलाल कॉलोनी, कानपुर), सोनी वलेचा (श्री निवासपुरी, दिल्ली), रिया चन्देल (मलकापुरम, विशाखापटनम), प्रवान (सेक्टर 40ए, चण्डीगढ़), अमृता (सरायरैचन्द, जौनपुर), सृष्टि कक्कड़ (प्रिंसटन एस्टेट, गुड़गाँव), आन्या (पीतमपुरा, दिल्ली), एकता प्रसाद (प्रिया अपार्टमेंट, सरदार नगर), वैभव किशोर (डाँगोली बांगर), काव्या सन्दूजा (अर्जुन नगर, गुड़गाँव), समनीत (गोबिन्द नगर, फिरोजपुर सिटी), महक सोनी (झाकड़ी, शिमला), यशप्रीत (सेक्टर 40डी, चण्डीगढ), अमनदीप (सेक्टर 38सी, चण्डीगढ़),

अपैल अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 अप्रैल तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जून अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

बताओ तो जानें?

–चाँद मोहम्मद घोसी

यहाँ आकाश में उड़ रहे पक्षियों में से बिल्कुल एक जैसे दो पक्षियों के चित्र कौन से नम्बर के हैं ?

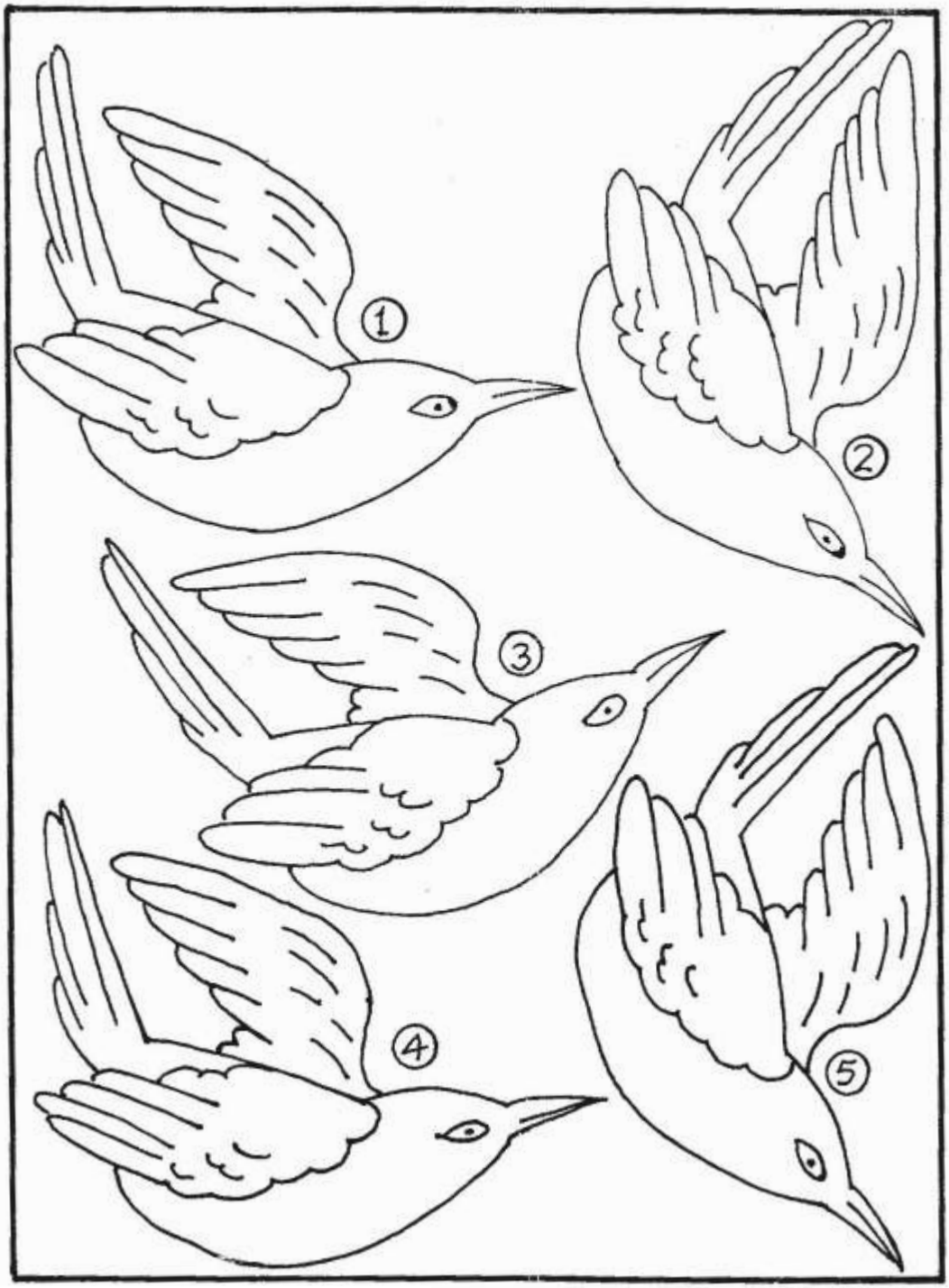

उत्तर : नम्बर 1 और 5 एक जैसे पक्षी हैं।

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)